RNI No. GJHIN/25/A2786
NAVSARJAN SANSKRUTI

नवसर्जन संस्कृति

नवसर्जन संस्कृति

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 01
अंक : 070
दि. 12.12.2025,
शुक्रवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

EDITOR : JIGNESHKUMAR PETHABHAI VAGHELA Regd. Office : B/13, Sneh Plaza Shopping Centre, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad-382 424, Gujarat, India.

Phone : 76983 33307 (M) 84859 51747, 70963 33307 ● Email : navsarjansanskruti2016@gmail.com ● Email : navsarjansanskruti2016@yahoo.com ● Website : www.navsarjansanskruti.com

तीन साल का सफरः मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में गुजरात विकास, सुशासन और वैश्विक पहचान का केंद्र बना

गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल ने आज अपने कार्यकाल के तीन साल पूरे किए—ऐसे तीन वर्ष, जिन्होंने राज्य को नयी दिशा, नई गति और नई पहचान दिलाई है। 156 सीटों के अभूतपूर्व जनादेश के साथ सत्ता में आए पटेल ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन में सुशासन, सेवा और समर्पण को केंद्र में रखकर गुजरात को हर क्षेत्र में तेज़ी से आगे बढ़ाया है। वैश्विक आयोजनों की शानदार मेजबानी से लेकर संकट की घड़ी में त्वरित नेतृत्व, कृषि से लेकर स्टार्टअप तक की नीतियों में क्रांतिकारी बदलाव और महिलाओं, युवाओं, किसानों तथा वंचित वर्गों के लिए ऐतिहासिक योजनाओं ने गुजरात को देश नहीं, बल्कि दुनिया के सबसे तेज़ी से उभरते क्षेत्रों में से एक बना दिया है। इन तीन वर्षों में गुजरात ने 10वीं वाइब्रेंट गुजरात समिट, जी-20 आयोजनों और पहली बार आयोजित क्षेत्रीय वीजीआरसी कॉन्क्लेवों के जरिए दुनिया को अपनी क्षमता का परिचय दिया। वहीं 2025 में हुए एयर इंडिया विमान हादसे के दौरान मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल की संवेदनशीलता और त्वरित कार्रवाई ने संकट प्रबंधन में गुजरात मॉडल की एक नई मिसाल पेश की। यह नेतृत्व केवल बैठकों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि जमीन पर राहत, बचाव और मानवीय सहायता से जुड़ी हर प्रक्रिया में सीएम खुद जुड़े रहे। 2025 को शहरी विकास वर्ष घोषित कर गुजरात ने शहरों को विश्व स्तरीय, हरित, तकनीक-संचालित और सुविधासंपन्न बनाने के लिए तेज़ गति से परिवर्तन शुरू किया। इसी के साथ खेलों में निवेश और खिलाड़ियों के प्रोत्साहन ने गुजरात को कॉमनवेल्थ गेम्स 2030 का मेजबान बना दिया—यह उपलब्धि किसी भी राज्य के लिए असाधारण है।

औद्योगिक क्षेत्र में गुजरात ने सेमीकंडक्टर और रिन्यूएबल एनर्जी हब बनने की दिशा में बड़े कदम उठाए हैं। डिजिटल गवर्नेंस, प्रशासनिक सुधार, एकीकृत आपात नंबर प्रणाली, तथा निवेश के अनुकूल नीति ढांचे ने गुजरात के भविष्य की मजबूत नींव रखी है। कृषि राहत, बेमौसम बारिश में किसानों को आर्थिक सुरक्षा, महिला सशक्तिकरण के लिए रिकॉर्ड बजट, मातृ-स्वास्थ्य योजनाओं का विस्तार, शिक्षा में एआई-आधारित चेतावनी प्रणाली और आदिवासी कल्याण की नई योजनाएं—इन सबने भूपेंद्र पटेल के कार्यकाल को भूमि से जुड़ी नीतियों का दौर बना दिया है।

स्वास्थ्य क्षेत्र में पीएमजेएवाई-मा के तहत सहायता 10 लाख रुपए करने से लेकर गुजरात को देश का सबसे बड़ा किडनी ट्रांसप्लांट राज्य बनाने तक के कदम गुजरात की उन्नत स्वास्थ्य प्रणाली की पहचान हैं। इसी तरह मिशन स्कूल्स ऑफ एक्सीलेंस के माध्यम से लाखों बच्चों तक आधुनिक शिक्षा पहुंची, स्मार्ट क्लासरूम, कंप्यूटर लैब, स्टेम लैब जैसे ढांचों ने सरकारी स्कूलों की नई छवि गढ़ी।

युवाओं के लिए गुजरात में खेले गए राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय खेल प्रतियोगिताओं ने न केवल स्पोर्ट्स इन्फ्रास्ट्रक्चर को ताकत दी, बल्कि खेल महाकुंभ जैसे आयोजनों ने प्रतिभा खोजने और प्रेरित करने का बड़ा मंच तैयार किया। स्टार्टअप नीति के दूसरे संस्करण ने गुजरात को देश के स्टार्टअप रैंकिंग में लगातार शीर्ष स्थान दिलाया है। शांति और सुरक्षा के मोर्चे पर भी गुजरात पीछे नहीं रहा। ड्रग्स के खिलाफ सबसे बड़ी कार्रवाई, नई एंटी-नारकोटिक्स टास्क फोर्स, ई-गवर्नेंस आधारित पुलिस पोर्टल, हजारों सीसीटीवी कैमरों का नेटवर्क और ड्रोन सर्वेलांस—इन सबने कानून व्यवस्था को और अधिक मजबूत और आधुनिक बनाया है।

पर्यटन, संस्कृति और विरासत के क्षेत्र में भी गुजरात चमका। यूनेस्को ने गरबा को विश्व की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर घोषित किया, धोरडो को विश्व के श्रेष्ठ पर्यटन गांवों में स्थान मिला और कच्छ के स्मृतिवन संग्रहालय को दुनिया के सबसे खूबसूरत संग्रहालयों की सूची में शामिल किया गया।

इन तीन वर्षों में गुजरात ने केवल विकास नहीं किया—बल्कि अपने हर नागरिक तक प्रगति और सुरक्षा का संदेश पहुंचाया। भूपेंद्र पटेल का यह कार्यकाल एक ऐसी यात्रा रहा है जिसने गुजरात को भविष्य के विकसित भारत@2047 का अग्रदूत बनाया है। राज्य ने जो उपलब्धियां हासिल की हैं, वह यह बताती हैं कि आने वाला समय गुजरात और भी ऊंचाइयों का गवाह बनेगा।

शताब्दी अस्पताल की अमानवीय लापरवाही पर विधानसभा में हंगामा, सरकार ने मांगा तात्कालिक जवाब

दिल्ली की सर्द हवा में अदालत के एक फैसले ने अचानक गर्माहट पैदा कर दी। 2020 के दिल्ली दंगों के आरोपी और लंबे समय से जेल में बंद छात्र नेता उमर खालिद को आखिरकार दो सप्ताह की अंतरिम जमानत मिल गई है। पांच साल से अधिक समय तक बंद दरवाज़ों और अदालतों के बीच झूलती उनकी जिंदगी को पहली बार ऐसा मौका मिला है जब वह जेल की सलाखों के बाहर खुली हवा में अपने परिवार के बीच खड़े होंगे—वह भी अपनी सगी बहन की शादी के पावन अवसर पर।

दिल्ली की ट्रायल कोर्ट ने कहा कि खालिद 16 दिसंबर से 29 दिसंबर तक जमानत पर रह सकेंगे। अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश समीर बाजपेयी ने अपने आदेश में साफ लिखा कि चूंकि यह शादी उनकी वास्तविक बहन की है और परिवार के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण अवसर है, इसलिए अदालत मानवीय आधार पर जमानत आवेदन स्वीकार करती है। अदालत ने यह राहत 20 हजार रुपये के निजी मुचलके और इतनी ही राशि की दो जमानतियों के आधार पर दी है।

लेकिन यह आज़ादी बिना शर्त नहीं है। जमानत की अवधि के दौरान खालिद किसी भी तरह का सोशल मीडिया इस्तेमाल नहीं कर सकेंगे। वह केवल अपने परिवार, रिश्तेदारों और नज़दीकी दोस्तों से मिल सकेंगे—वही लोग जो वर्षों से उनके लौटने का इंतज़ार कर रहे थे। खालिद को यह भी सुनिश्चित करना होगा कि वह केवल अपने घर पर रहें या उन्हीं स्थानों पर जाएं, जिन्हें उन्होंने शादी से जुड़े कार्यक्रमों के लिए अदालत को बताया है।

यह भी गौर करने योग्य है कि खालिद ने पहले 14 दिसंबर से 29 दिसंबर तक की जमानत मांगी थी, क्योंकि 27 दिसंबर को उनकी बहन की शादी तय है। अदालत ने दो दिन के अंतर को छोड़कर उनका अनुरोध मान लिया।

सितंबर 2020 में गिरफ्तारी के बाद से खालिद अपने ऊपर लगे गंभीर आरोपों—आपराधिक साज़िश, दंगा, गैरकानूनी सभा और यूएपीए जैसी कठोर धाराओं के तहत मामले—का सामना कर रहे हैं। इन आरोपों ने उनकी जमानत की राह को हमेशा बेहद मुश्किल बनाए रखा। कई बार याचिकाएँ वापस ली गईं, कई बार अदालतों ने लंबी सुनवाई की, लेकिन इस बीच उनका परिवार सिर्फ उम्मीदों के सहारे ही जीता रहा।

अब, इतने वर्षों बाद उन्हें मिली यह छोटी-सी राहत एक परिवार के लिए बहुत बड़ी बात है। माँ–बाप की वह आँखें, जो हर अदालत की तारीख पर उम्मीद और थकावट के बीच टिमटिमाती रहती थीं, अब कुछ दिनों के लिए ही सही, लेकिन चमक उठेंगी। बहन की शादी का मंडप, जिसमें शायद एक कुर्सी वर्षों से खाली थी, अब भर सकेगा।

16 दिसंबर को जेल का एक दरवाज़ा दो हफ्तों के लिए उनके लिए खुलेगा—लेकिन उस दरवाज़े के बाहर उनका स्वागत सिर्फ आज़ादी नहीं, बल्कि भावनाओं, वचनों और परिवार की प्रतीक्षा करेगी। और 29 दिसंबर को वह फिर से उसी दरवाज़े से होकर अंदर लौट आएँगे, क्योंकि मुकदमा अब भी जारी है।

परंतु इन दो हफ्तों में वह समय होगा—जिसे कोई अदालत, कोई धारा, कोई फैसला उनसे छीन नहीं सकताः अपनों के बीच लौटने का समय, अपनी बहन की शादी में भाई बनने का समय, और एक इंसान के रूप में सांस लेने का समय।

गोवा नाइट क्लब केस में बड़ा फैसला: लूथरा ब्रदर्स की अग्रिम जमानत खारिज, अदालत ने नहीं माना एक भी तर्क

नई दिल्ली की रोहिणी कोर्ट में गुरुवार का दिन गहमागहमी से भरा था। चर्चा सिर्फ एक ही मामले की थी—गोवा नाइट क्लब विवाद में आरोपी लूथरा ब्रदर्स को अग्रिम ज़मानत मिलेगी या नहीं। अदालत ने जब अपना फैसला सुनाया तो माहौल गंभीर हो गया। गौरव और सौरभ लूथरा की अग्रिम ज़मानत याचिका खारिज कर दी गई, और इसके साथ ही इस हाई-प्रोफाइल केस की कानूनी जटिलता और बढ़ गई।

अदालत में दोनों भाइयों की ओर से कई तर्क रखे गए थे। कहा गया कि वे कानून का पालन करते हैं, टैक्स भरते हैं, समाज के लिए रोजगार के अवसर पैदा करते हैं और उनका कोई आपराधिक इतिहास नहीं है। उन्होंने यह भी कहा कि उन्हें अपनी सुरक्षा की चिंता है, इसलिए कुछ समय के लिए अदालत उनकी रक्षा सुनिश्चित करे। लेकिन अदालत ने इन दलीलों को राहत देने लायक नहीं माना।

उनके वकील तनवीर अहमद मीर ने अदालत में कहा कि दोनों भाई फुकेत में रहने के बावजूद भारत में कारोबार चलाते हैं और कई लोगों को रोजगार देते हैं। उन्होंने स्पष्ट किया कि वे फिलहाल सिर्फ ट्रांजिट अंतरिम ज़मानत चाहते हैं, न तो जमानत के गुण-दोष पर बहस कर रहे हैं और न ही किसी तरह की छूट चाहते हैं। यहां तक कि उन्होंने यह भी कहा कि जांच एजेंसी उन्हें जहां भी बुलाएगी, वे तुरंत पेश होंगे।

इसके जवाब में गोवा पुलिस ने अदालत में सख्त रुख अपनाया। पुलिस ने दस्तावेजों के आधार पर बताया कि लूथरा ब्रदर्स के दावे टिकते ही नहीं। जांच में सामने आया कि जिस नाइट क्लब को लेकर विवाद उठा, उसका ट्रेड लाइसेंस वर्ष 2023 में ही समाप्त हो गया था और अब तक उसका नवीनीकरण नहीं कराया गया। लीज दस्तावेजों और अन्य कागज़ों ने यह स्पष्ट कर दिया कि क्लब की गतिविधियाँ लूथरा ब्रदर्स के संचालन में ही चल रही थीं। पुलिस के मुताबिक यह तथ्य बेहद महत्वपूर्ण है और इसी आधार पर अदालत को अग्रिम ज़मानत मंजूर नहीं करनी चाहिए।

अदालत ने पुलिस की दलीलों और जांच सामग्री को देखते हुए यह माना कि मामले की संवेदनशीलता और गंभीरता को देखते हुए अभी किसी भी प्रकार की राहत देना उचित नहीं होगा। इस फैसले के बाद लूथरा ब्रदर्स को अब जांच का पूरा सामना करना पड़ेगा, और आने वाले दिनों में पुलिस पूछताछ और अन्य कानूनी कार्रवाइयाँ और तेज होंगी।

फैसले के बाद अदालत परिसर में मौजूद पर्यवेक्षकों का कहना था कि यह आदेश इस बात का संकेत है कि अदालतें हाई-प्रोफाइल मामलों में भी सख्त रुख अपनाने से पीछे नहीं हटेंगी। वहीं पुलिस के अधिकारियों का कहना है कि उनके पास मामले से जुड़े और भी कई तथ्य हैं, जिनकी जांच आगे की जाएगी।

लूथरा ब्रदर्स का अगला कदम क्या होगा, यह देखना दिलचस्प होगा, लेकिन इतना तय है कि गोवा नाइट क्लब मामला अब एक और गंभीर अध्याय में प्रवेश कर चुका है।

23 साल की जंग, एक विधवा की जीत- सुप्रीम कोर्ट ने कहाः गरीब के चेहरे की मुस्कान ही हमारी असली कमाई

नई दिल्ली। न्याय के गलियारों में कभी–कभी ऐसे मामले सामने आते हैं जो केवल कानून की बहस नहीं, बल्कि इंसानियत की सबसे गहरी परतों को छू लेते हैं। बिहार की संयोगिता देवी का मामला ऐसा ही था—23 साल तक अकेले संघर्ष करती रही एक विधवा, जिसकी दुनिया एक रेल हादसे में उजड़ गई और जिसके बाद उसे मुआवज़े के लिए दर–दर भटकना पड़ा। लेकिन सुप्रीम कोर्ट ने उसकी आवाज़ सुनी, विश्वास को थामा और आखिरकार न्याय उसके दरवाज़े तक पहुंचा।

सुप्रीम कोर्ट की सुनवाई के दौरान जब चीफ जस्टिस ऑफ इंडिया सूर्य कांत ने कहा—"एक गरीब महिला के चेहरे पर मुस्कान लाना ही हमारी असली कमाई है", तो यह केवल एक टिप्पणी नहीं थी, बल्कि अदालतों के उस मानवीय स्वरूप की घोषणा थी, जो अक्सर क़ानूनी दस्तावेज़ों के नीचे दब जाता है।

कहानी 2002 से शुरू होती है। बख्तियारपुर स्टेशन पर भारी भीड़ थी। भगदड़ जैसे माहौल में विजय सिंह चलती ट्रेन से गिर पड़े और उनकी मौत हो गई। पीछे रह गई संयोगिता देवी—निराश, टूटी हुई, लेकिन पति के लिए न्याय की उम्मीद लिए। उसने मुआवज़े की अर्जी लगाई, पर रेलवे क्लेम्स ट्रिब्यूनल और पटना हाई कोर्ट ने उसे यह कहकर खारिज कर दिया कि मृतक "मानसिक रूप से अस्वस्थ" था।

संयोगिता देवी ने हार नहीं मानी। वह सुप्रीम कोर्ट पहुंची, जहाँ अदालत को निचली अदालतों का निर्णय "तथ्यों के विपरीत और कल्पना पर आधारित" लगा। 2023 में सुप्रीम कोर्ट ने रेलवे को आदेश दिया कि उसे मुआवज़ा दिया जाए। पर समस्या यहीं खत्म नहीं हुई—महिला अपना पता बदल चुकी थी, उसका पुराना वकील भी इस दुनिया में नहीं था, और रेलवे लगातार उससे संपर्क करने की कोशिश कर रहा था।

जब प्रयास असफल रहे, तो रेलवे खुद सुप्रीम कोर्ट पहुंची और कहा कि आदेश का पालन करना मुश्किल हो रहा है। सुप्रीम कोर्ट ने तुरंत हस्तक्षेप किया—अखबारों में नोटिस जारी करने का निर्देश दिया, स्थानीय पुलिस और प्रशासन को महिला को खोजने का आदेश दिया। अदालत ने कहा—"यह न्यायपालिका का दायित्व है कि राहत सही व्यक्ति तक पहुंचे।"

और फिर वह हुआ जिसका इंतज़ार 23 साल से था।

स्थानीय प्रशासन और रेलवे ने उसे उसके नए गांव में ढूंढ निकाला। आधार, पैन, ग्राम पंचायत प्रमाणपत्र मिले, उसने बैंक विवरण भेजा। आखिरकार 13 नवंबर 2025 को उसके बैंक खाते में 8,92,953 रुपये ट्रांसफर कर दिए गए।

अदालत ने रेलवे की तत्परता और वकील फौजिया शकील की निःशुल्क सहायता की सराहना की। चीफ जस्टिस सूर्य कांत ने सुनवाई में कहा—

"हमारा काम सिर्फ फ़ाइलें बंद करना नहीं, बल्कि जरूरतमंद तक न्याय को पहुंचाना है।"

यह मामला सिर्फ एक मुआवज़े का नहीं था—यह भारतीय न्याय व्यवस्था की उस मानवीय शक्ति का प्रमाण था, जहाँ न्याय देर से सही, पर उम्मीद के साथ आता है और एक पीड़ित की ज़िंदगी में लौटकर रोशनी भर देता है। 23 साल की यह लड़ाई आखिरकार मुस्कान में बदल गई, और उसी मुस्कान को सुप्रीम कोर्ट ने अपनी "असली कमाई" कहा।

इंडिगो का बड़ा ऐलान—रद्द उड़ानों से परेशान यात्रियों को मिलेगा 10 हजार का अतिरिक्त वाउचर, डीजीसीए ने सीईओ से की लंबी पूछताछ

देश की सबसे बड़ी एयरलाइन इंडिगो ने आखिरकार तीन से पांच दिसंबर के बीच हुई भारी उड़ान रद्दीकरण की जिम्मेदारी स्वीकार कर ली है। इन दिनों यात्रियों को जिस अव्यवस्था और असुविधा से गुजरना पड़ा, उसकी भरपाई के लिए कंपनी ने गुरुवार को एक महत्वपूर्ण घोषणा की। इंडिगो ने कहा कि वह उन सभी यात्रियों को 10,000 रुपये का ट्रैवल वाउचर देगी, जिनकी उड़ानें इन तारीखों में रद्द हुई थीं। यह वाउचर अगले 12 महीनों तक किसी भी इंडिगो उड़ान में इस्तेमाल किया जा सकेगा।

कंपनी ने साफ किया है कि यह वाउचर सरकार द्वारा निर्धारित मुआवजे से अलग होगा। यानी—यदि कोई उड़ान 24 घंटे के भीतर रद्द हुई थी, तो यात्रियों को नियमों के तहत 5,000 से 10,000 रुपये तक का अनिवार्य मुआवजा मिलेगा, और इसके ऊपर अतिरिक्त 10,000 रुपये का वाउचर भी दिया जाएगा। यात्रियों के लिए यह राहत का कदम उस समय आया है जब एयरलाइन की सेवाओं पर सवाल उठने लगे थे और सोशल मीडिया पर शिकायतों की बाढ़ आ गई थी।

यात्रियों ने तीन दिनों तक देर रात तक एयरपोर्ट पर फंसे रहने, कनेक्टिंग फ्लाइट छूटने, अंतरराष्ट्रीय यात्राएँ बिगड़ने और होटल-टैक्सी खर्चों के बारे में कई शिकायतें दर्ज कराई थीं। इंडिगो के इस फैसले को स्थिति सुधारने और भरोसा वापस जीतने की दिशा में एक बड़ा कदम माना जा रहा है।

उधर, मामले ने नियामक एजेंसियों का भी ध्यान खींचा। नागरिक उड्डयन महानिदेशालय (DGCA) ने घटना को गंभीरता से लेते हुए इंडिगो के मुख्य कार्यकारी अधिकारी पीटर एल्बर्स को तलब किया। गुरुवार सुबह वे दिल्ली स्थित डीजीसीए मुख्यालय पहुँचे, जहाँ करीब दो घंटे तक उनसे विस्तृत पूछताछ की गई।

पूछताछ में अधिकारियों ने एयरलाइन के ऑपरेशन्स, क्रू मैनेजमेंट, फ्लाइट शेड्यूलिंग, रिफंड और मुआवजे की प्रक्रिया, और रद्द उड़ानों के पीछे की असली वजहों** से जुड़े सवाल पूछे। डीजीसीए यह समझना चाहता है कि आखिर इतनी बड़ी संख्या में उड़ानें अचानक क्यों ठप पड़ीं और एयरलाइन ने वैकल्पिक इंतजामों में देरी क्यों की।

सूत्रों के मुताबिक, नियामक एजेंसी आने वाले दिनों में इस मामले पर एक विस्तृत रिपोर्ट मांग सकती है, ताकि भविष्य में ऐसी स्थिति दोबारा न हो। एयरलाइन से यह भी पूछा गया कि जब क्रू की उपलब्धता कम हो रही थी, तब पहले से तैयारी क्यों नहीं की गई और यात्रियों को समय रहते क्यों नहीं चेताया गया। जहाँ यात्रियों को मुआवजे और वाउचर के रूप में राहत मिली है, वहीं इंडिगो पर अब यह दबाव भी बढ़ गया है कि वह अपनी सेवाओं को स्थिर करे और ऐसे संकट की पुनरावृत्ति न होने दे। एयरलाइन ने कहा है कि वह स्थिति को सुधारने के लिए सभी नियामक निर्देशों का पालन करेगी और यात्रियों को बेहतर अनुभव दिलाने के लिए कदम उठाएगी। फिलहाल, हजारों यात्रियों के लिए यह राहत की खबर है, जो इन तीन दिनों के अव्यवस्था के कारण तनाव, खर्च और यात्रा योजना बिगड़ने का सामना कर चुके थे। अब हर किसी की नजर इस बात पर होगी कि इंडिगो वादे के मुताबिक कितनी तेजी और पारदर्शिता से मुआवजा तथा वाउचर प्रदान करती है।

संपादकीय

यूनेस्को ने विश्व धरोहर किया घोषित

इसमें दो राय नहीं कि हमारी अमूर्त विरासतें प्राचीन और आधुनिक सभ्यता के बीच पुल का काम करती हैं। यह महज एक स्मृति नहीं, वरन एक निरंतर बहती जीवंत विस्तारित नदी की भांति है। इसी आलोक में दिवाली को यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर घोषित किया जाना हर भारतीय के लिये गर्व व सुकून का विषय है। निस्संदेह, दिवाली हमारी सनातन संस्कृति व सभ्यता की आत्मा रही है। प्रकृति के अहसासों के अनुरूप अंधेरे के खिलाफ उजाले की जंग की प्रतीक। समाज में समता का संदेश की गरीब के घर भी भरपूर रोशनी पहुंचे। किसी भी समाज में कुम्हार, मूर्तिकार,खील बताशे वाले से लेकर व्यापारी के घर तक लक्ष्मी पहुंचे। उल्लेखनीय है कि दिवाली को यह स्थान मिलने से पहले कुंभ मेले समेत देश की 15 धरोहरें इस सूची में शामिल हैं। बता दें कि इस वर्ष 19 अक्तूबर को दीपोत्सव पर अयोध्या में सरयू की राम पैड़ी पर जब 26.17 लाख दीये जलाये गए थे तो इस उपलब्धि का प्रकाश पूरी दुनिया में फैला था। गिनीज बुक आफ विश्व रिकॉर्ड में आयोजन दर्ज हुआ था। इस के बाद ही संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक तथा सांस्कृतिक संगठन यानी यूनेस्को ने अमूर्त विश्व धरोहर सूची में दिवाली को शामिल किया है। इससे पहले कुंभ मेला, वैदिक मंत्रोच्चार, रामलीला,छाऊ नृत्य, दुर्गा पूजा आदि इस सूची में शामिल है। उल्लेखनीय है कि भारत यूनेस्को की इंटर-गवर्नमेंटल कमेटी फॉर इंटैन्जिबल हेरिटेज की बीसवीं बैठक की दिल्ली में मेजबानी कर रहा है, जो 13 दिसंबर को समाप्त होगी। दिवाली को संस्कृति और प्रकृति से जुड़ा मानकर देश के विभिन्न भागों में दस दिसंबर को दीपावली समारोह आयोजित करने का भी फैसला लिया गया था। मकसद यही था कि ताकि विश्व के सामने इस पर्व को मजबूत सांस्कृतिक पहचान के रूप में पेश किया जा सके। निस्संदेह, दिवाली न केवल संस्कृति-प्रकृति से जुड़ी है बल्कि ज्ञान व सनातन धर्म की भी पर्याय है। निस्संदेह, इस घोषणा से इस पर्व को वैश्विक मान्यता मिल सकेगी। दरअसल, यूनेस्को ऐसी सांस्कृतिक व पारंपरिक चीजों को इस सूची में शामिल करता है जो मूर्त रूप में तो नहीं होती, मगर किसी समाज में उसकी व्यापक मान्यता होती है। वास्तव में, यूनेस्को के ऐसे प्रयासों का मकसद यही रहा है कि आने वाले समय में दुनिया की महत्वपूर्ण सांस्कृति धरोहरें सुरक्षित रहें। जिससे भविष्य की पीढ़ियों को इसका लाभ मिल सके। दरअसल, इस घोषणा के बाद भारत दीपावली के निहितार्थ अंधकार से प्रकाश की ओर जाने के संदेश को पूरी दुनिया को दे सकेगा। इस बार की सूची में दुनिया की जीवित परंपराओं, सामाजिक प्रथाओं, त्योहारों, लोककला व परंपारिक ज्ञान प्रणालियों को सुरक्षित रखने वाली दुनिया की बीस अमूर्त विरासतों को इस सूची में जगह दी गई। कई पीढ़ियों से सहेजी गई विरासत को नई पीढ़ी तक पहुंचाने का एक सार्थक प्रयास है यूनेस्को की पहल। निस्संदेह, ये धरोहरें विश्व के विभिन्न समुदायों की पहचान का हिस्सा हैं। सही मायनों में वैश्वीकरण के दौर में सांस्कृतिक विविधत को अक्षुण्ण बनाये रखने में मददगार साबित होंगी। निश्चय ही भारतीय संस्कृति की अमिट धरोहर वाले पर्व दीपावली का विश्व धरोहर की सूची में शामिल होना भारतीयों के लिये गर्व की बात है। जिसकी बानगी दिल्ली व देश के अन्य भागों में दूसरी दिवाली मनाने के रूप में नजर आई। निश्चय ही इस फैसले से भारतीय सांस्कृतिक पहचान को वैश्विक स्तर पर नई मान्यता मिलेगी। दुनिया इस पर्व की भावनात्मकता के इतर इसकी आध्यात्मिकता व सामाजिक समरसता के संदेश से रूबरू हो सकेगी। निस्संदेह, यह पर्व भारतीय संस्कृति और लोकाचार से गहरे तक जुड़ा है। अब हमारी भी जिम्मेदारी यह सुनिश्चित करना है कि दीपावली हमेशा समृद्ध विरासत बनी रहे। दुनिया में उजाले की अंधेरे पर जीत का संदेश निरंतर जाता रहे। जो शाश्वत मानवीय मूल्यों की रक्षा का संदेश भी है। विश्वास किया जाना चाहिए कि भारत की इस अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के गहरे संदेश का पूरी दुनिया अंगीकार कर सकेगी।

अमेरिका ने पाक पर लगाया करोड़ों डॉलर का दाँव, बलूचिस्तान के बारूद पर बैठकर सोना खोदेंगे ट्रंप !

> हम आपको बता दें कि रिकोडिक दुनिया के सबसे बड़े अविकसित तांबा–सोना भंडारों में से एक है। माना जाता है कि यहां 15 मिलियन टन तांबा और 26 मिलियन औंस सोना है। कनाडा की दिग्गज कंपनी बैरिक गोल्ड पहले ही 2028 तक उत्पादन शुरू करने का लक्ष्य तय कर चुकी है।

अमेरिका के ट्रंप प्रशासन ने पाकिस्तान के सबसे अस्थिर और विद्रोह-ग्रस्त प्रांत बलूचिस्तान में स्थित रिकोडिक (Reko Diq) तांबा–सोना खदान के लिए 1.25 अरब डॉलर के यूएस EXIM बैंक वित्तपोषण को मंजूरी दे दी है। यह वही परियोजना है जिसे वर्षों से सुरक्षा संकट, राजनीतिक विवाद और बलूच विद्रोहियों की हिंसा ने कभी आगे बढ़ने नहीं दिया। इस निवेश के साथ निकट भविष्य में 2 अरब डॉलर तक की अमेरिकी मशीनरी और सेवाएँ पाकिस्तान भेजी जाएँगी। अमेरिकी चार्ज द'अफ़ेयर्स नटाली बेकर ने कहा है कि यह परियोजना अमेरिका के लिए 6,000 और बलूचिस्तान में 7,500 नौकरियाँ उत्पन्न करेगी। उन्होंने रिकोडिक को दोनों देशों के लिए लाभकारी आदर्श मॉडल बताया है।हम आपको बता दें कि रिकोडिक दुनिया के सबसे बड़े अविकसित तांबा–सोना भंडारों में से एक है। माना जाता है कि यहां 15 मिलियन टन तांबा और 26 मिलियन औंस सोना है। कनाडा की दिग्गज कंपनी बैरिक गोल्ड पहले ही 2028 तक उत्पादन शुरू करने का लक्ष्य तय कर चुकी है। इस परियोजना का 50% मालिकाना बैरिक के पास है, जबकि पाकिस्तानी संघीय व बलूचिस्तान सरकार के पास 25-25% हिस्सेदारी है। रिपोर्टों के अनुसार इस परियोजना से 37 वर्षों में 70 अरब डॉलर से अधिक मुक्त नकदी प्रवाह उत्पन्न होने की संभावना है।

हालाँकि, सुरक्षा खतरे सबसे बड़ी चुनौती बने हुए हैं। बलूच विद्रोही गुट लगातार सेना, खनन परियोजनाओं और विदेशी निवेश पर हमले करते रहे हैं। हाल ही में बलूच नेताओं ने स्पष्ट चेतावनी दी कि कोई भी विदेशी निवेशक बलूचिस्तान के कब्जे को वैधता देने की गलती नहीं करे। बलूच नेशनल मूवमेंट के अध्यक्ष नसीम बलूच ने इसे

बलूच जनता की संपत्ति पर पाकिस्तानी कब्जे को बढ़ावा देने वाला कदम बताया।

इसी बीच विश्व बैंक की IFC, एशियन डेवलपमेंट बैंक और अन्य वैश्विक उधारदाता 2.6 अरब डॉलर से अधिक का वित्त पैकेज जोड़ रहे हैं। साथ ही सऊदी अरब की मनारा मिनरल्स भी 10–20% हिस्सेदारी खरीदने पर बातचीत कर रही है। लेकिन सबसे बड़ा सवाल वही है कि क्या पाकिस्तान इतने लंबे समय तक सुरक्षा, बुनियादी ढाँचे और राजनीतिक स्थिरता की गारंटी दे पाएगा? देखा जाये तो अमेरिकी निवेश ऐसे समय में आया है जब वाशिंगटन चीन-प्रभुत्व वाली खनिज आपूर्ति श्रृंखलाओं से बाहर निकलने के लिए नए स्रोत तलाश रहा है। फिर भी, रिकोडिक पर यह दाँव एक हाई-रिस्क जुआ माना जा रहा है।

यह भी देखने में आ रहा है कि रिकोडिक में अमेरिकी निवेश सिर्फ आर्थिक सौदा नहीं बल्कि यह भू-राजनीतिक शतरंज की बिसात पर फेंकी गई भारी-भरकम चाल है। पाकिस्तान इसे बड़ी जीत बताकर छाती ठोक रहा है पर असलियत यह है कि अमेरिका ने यह पैसा दक्षिण एशिया के सबसे अस्थिर इलाके में आग से खेलने के अंदाज़ में डाला है। सवाल यह नहीं कि अमेरिका क्यों आया? सवाल यह है कि वह इतना देर से और इतनी जगह पर क्यों आया?

हम आपको बता दें कि यह निवेश उस समय हो रहा है जब बलूचिस्तान में विद्रोह चरम पर है। बलूच नेता साफ चेतावनियाँ दे रहे हैं कि यह निवेश उनके लिए शोषण का नया अध्याय है। बलूच नेता कह रहे हैं कि प्रांत में दशकों से मौजूद असंतोष और सैन्य दमन को देखते हुए कोई भी समझदार निवेशक पहले सौ बार सोचे। लेकिन अमेरिका ने शायद जानबूझकर जोखिम को स्वीकार कर लिया है। ऐसा लगता है कि यह सौदा पाकिस्तानी नहीं, बल्कि अमेरिकी एजेंडे का हिस्सा है। दरअसल, अमेरिका का असली मकसद है चीन को पछाड़ना। आज की सच्चाई यह है कि दुनिया में तांबा, सोना और अन्य क्रिटिकल मिनरल्स नई सदी का तेल बन चुके हैं। चीन खासकर अफ्रीका और दक्षिण अमेरिका में इस क्षेत्र में भारी पकड़ बना चुका है। अमेरिका बड़ी तेजी के साथ नए स्रोत ढूँढ़ रहा है और पाकिस्तान का रिकोडिक, जो तिब्बती–ईरानी खनिज बेल्ट का हिस्सा है वह अमेरिकी रणनीति में एक खूबसूरत चेकमेट जैसा दिखता है।

इसके साथ ही बलूचिस्तान का भौगोलिक महत्व इस कदम को और तीखा बनाता है। ईरान की सरहद पास है, अफ़ग़ानिस्तान की अनिश्चितता बगल में है, चीन–पाकिस्तान इकोनॉमिक कॉरिडोर (CPEC) ठीक सिर के ऊपर है। ऐसे में अमेरिका एक ही प्रहार में चीन को संकेत देता है कि हम अभी भी आपके बगल में मौजूद हैं और आपके बंदरगाह (ग्वादर) के पीछे की जमीन पर निवेश करने की ताकत रखते हैं।

वहीं पाकिस्तान इस निवेश को आर्थिक राहत समझ रहा है, लेकिन असल में वह एक रणनीतिक जाल में फँसता दिख रहा है। देश की सुरक्षा एजेंसियों का इतिहास बताता है कि वह बलूचिस्तान को सेना-प्रभुत्व वाला इलाका मानती हैं। पर विदेशी निवेश वहीं चलता है जहाँ जनता को न्यूनतम सहमति या सुरक्षा मिले। यह दोनों ही पाकिस्तान के पास नहीं हैं। रिकोडिक के लिए न रेल लाइन है, न स्थायी सड़कें, न विश्वसनीय सुरक्षा तंत्र। ऊपर से बलूचिस्तान में हर विदेशी निवेश, चाहे चीनी हो, सऊदी हो या अब अमेरिकी, यह विद्रोही गुटों का प्राथमिक निशाना बन जाता है। सवाल उठता है कि कनाडा की बैरिक गोल्ड इतने वर्षों में हिल-डुल भर नहीं सकी तो अमेरिका किस आत्मविश्वास से यहां आ रहा है?

अमेरिका के इस क्षेत्र में आने से यह भी आशंका है कि चीन–अमेरिका प्रतिस्पर्धा नई तीव्रता पर पहुँचेगी। दरअसल, अमेरिका रिकोडिक को चीन की आपूर्ति श्रृंखला का प्रभुत्व तोड़ने के लिए इस्तेमाल करेगा। ऐसे में पाकिस्तान दोनों महाशक्तियों के बीच रस्साकशी में फँस जाएगा। इस परियोजना से ईरान भी असहज होगा क्योंकि अमेरिका समर्थित विशाल रणनीतिक परियोजना उसकी सीमा के ठीक पास उभरना तेहरान को बिल्कुल रास नहीं आएगा। साथ ही अमेरिकी परियोजना से अफगानिस्तान का प्रभाव भी बढ़ेगा क्योंकि इसकी सुरक्षा और आपूर्ति रूट तालिबान द्वारा नियंत्रित इलाकों के बेहद करीब हैं। तालिबान इस स्थिति का फायदा उठाने की कोशिश करेगा। साथ ही इस परियोजना से बलूच विद्रोह को नई ऊर्जा मिलेगी। विदेशी निवेश उनके लिए हमेशा दमन के नए प्रतीक के रूप में देखा गया है। परिणामस्वरूप सुरक्षा स्थिति और बिगड़ सकती है।

बहरहाल, यह निवेश पाकिस्तान के लिए आर्थिक संजीवनी नहीं बल्कि शक्ति के वैश्विक खेल में एक गैंबलिंग चिप है। अमेरिका को चाहिए क्रिटिकल मिनरल्स, पाकिस्तान को चाहिए डॉलर, लेकिन बलूचिस्तान को चाहिए न्याय, अधिकार और सुरक्षा जो किसी भी सौदे में शामिल नहीं हैं। ऐसे में माना जा रहा है कि रिकोडिक आने वाले वर्षों में दक्षिण एशिया की नई भू-रणनीतिक लड़ाई का केंद्र बन सकता है।

साथ ही अगर पाकिस्तान ने बलूचिस्तान की राजनीतिक समस्या को सैन्य तरीके से संभालने की भूल जारी रखी, तो अमेरिकी निवेश भी उसी तरह डूबेगा जैसे पहले के तमाम विदेशी प्रोजेक्ट डूब चुके हैं। यह सही है कि अमेरिका ने एक बड़ा दाँव लगाया है लेकिन यह भी सच्चाई है कि यह दाँव जितना चमकदार दिखता है, उतना ही बारूद के ढेर पर रखा हुआ है।

प्रेरणा

अतिथि-सेवा में समर्पित रंतिदेव का अमर त्याग

भारद्वाज के पवित्र वंश में जन्मे रंतिदेव अपने समय के उन दुर्लभ मनुष्यों में से थे, जिनका हृदय संसार के हर जीव के लिए बिना किसी शर्त धड़कता था। उनके जीवन का मूल मंत्र था कि ईश्वर ने जो दिया है, उसका पहला अंश दूसरों का होता है और अंतिम अंश स्वयं का। वे न धनवान थे, न किसी राज्य के स्वामी—पर उनके भीतर जो दयाभाव था, वह किसी भी राजा की समृद्धि से बढ़कर था। उनके घर में अक्सर भोजन की कमी रहती थी, पर किसी अतिथि को कभी अभाव का एहसास नहीं हुआ। उनके लिए अतिथि केवल मनुष्य नहीं था, बल्कि ईश्वर का स्वरूप था।

समय के प्रवाह में एक ऐसा कठोर दौर आया जब कई दिनों तक उन्हें न अन्न मिला, न जल। भूख शरीर को अंदर से खोखला कर चुकी थी। चलना कठिन हो गया था। आंखों के सामने अंधेरा छाने लगा था। पर मन में स्थिरता थी, जैसे किसी शीतल झरने की धारा—अडिग, शांत, दृढ़। रंतिदेव भोजन के लिए भटकते नहीं थे। उनका विश्वास था कि जो उन्हें मिलना है, वह स्वयं उनके भाग्य में चलकर आएगा, और जब आएगा, तो उसमें दूसरों का हिस्सा भी अवश्य होगा।

अंततः नियति ने उन्हें परीक्षा के बाद थोड़ी राहत दी। कई दिनों के उपवास के बाद उन्हें थोड़ी-सी रोटी और थोड़ा-सा पानी प्राप्त हुआ। इन दोनों में वह शक्ति थी जो उनके कमजोर शरीर को फिर से स्थिर कर देती, पर उन्होंने भोजन को सामने रखकर जैसे ही खाने का विचार किया, तभी एक भूखा ब्राह्मण वहां आ पहुंचा। उसका चेहरा सूखा था, आंखें भीतर धंसी थीं, और शरीर थरथरा रहा था। रंतिदेव के मन में उस क्षण अपनी भूख का स्मरण भी नहीं रहा। वे उठे, उस ब्राह्मण को बिठाया और अपनी पूरी थाली उसके सामने रख दी। ब्राह्मण ने तृप्त होकर आशीष दिया और चला गया, पर रंतिदेव के पास अब बहुत कम भोजन बचा था।

उन्होंने सोचा कि जो बचा है, उससे थोड़ा निर्वाह हो जाएगा। वे जैसे ही खाने को बैठे, इतनी देर में एक और भूखा व्यक्ति वहां आ गया। वह कोई विद्वान नहीं था, कोई सन्यासी नहीं था—बस एक साधारण मनुष्य था, जिसे जीवित रहने के लिए भोजन चाहिए था। रंतिदेव के लिए अंतर केवल इतना था कि पहले वाला ब्राह्मण था और यह सामान्य व्यक्ति, पर दोनों की भूख एक सी थी। उन्होंने फिर बिना सोचे उसे सारी बची हुई रोटी दे दी। अब उनके पास केवल कुछ कण रह गए थे। भूख भीतर तड़प रही थी। पेट कई दिनों से खाली था। पर रंतिदेव ने फिर भी मन को शांत रखा और आशा की कि शायद आज भी ईश्वर उन्हें संबल देंगे। वे उन कणों को खाने ही वाले थे कि अचानक एक यात्री अपने कुछ कुत्तों के साथ उनके आँगन में आ खड़ा हुआ। उसके चेहरे पर लाचारी थी—कुत्ते भूख से रो रहे थे। शायद एक-एक जीव कई मील चलकर यहां पहुंचे थे। रंतिदेव ने उन जीवों के चेहरे देखे और उनके हृदय में करुणा उमड़ पड़ी। उन्होंने बचे हुए कण भी उन कुत्तों और उनके मालिक को दे दिए।

अब उनकी थाली पूरी तरह खाली थी। उनका शरीर पहले से अधिक थक चुका था। ऐसा लग रहा था जैसे शरीर का रक्त सूखने लगा हो। पर उनके पास अभी थोड़ा-सा पानी बचा था। उन्होंने सोचा कि चलो, आज उसी से थोड़ा प्राण बल मिल जाएगा। वे पानी को हाथ में लेकर जैसे ही पीने को हुए, तभी एक अपरिचित व्यक्ति उनके सामने गिर पड़ा। उसकी सांस रूकी-सी थी, होंठ फट चुके थे, और उसकी जीभ सूखकर जैसे लकड़ी हो गई थी। वह बिना पानी के शायद कुछ और कदम भी नहीं चल सकता था।

रंतिदेव उस क्षण स्थिर होकर उसे देखते रहे। यह पानी उनका अंतिम सहारा था, और यह मनुष्य अंतिम सांसें गिन रहा था। रंतिदेव ने बिना एक पल खोए वह पानी उसके मुंह से लगाया और आखिरी बूंद तक उसे पिला दिया। वह व्यक्ति पानी पीकर जैसे एकदम जीवित हो उठा। उसकी आंखों में जो राहत का भाव था, उसे देखकर रंतिदेव का अपना हृदय आनंद से भर गया।

अतृप्त शरीर, सूखा गला, कमजोर काया—इन सबके बावजूद उनके भीतर एक दिव्य सुख का उदय हुआ, जैसा किसी राजा को भी नहीं मिलता। उनकी तृप्ति भोजन से नहीं थी, जल से नहीं थी, बल्कि दूसरों की पीड़ा दूर करने से थी।

रंतिदेव स्वयं भूखे रहे, प्यासे रहे, पर उन सबके बदले उन्हें वह आनंद मिला जिसे दुनिया का कोई भी खजाना नहीं दे सकता। उनके मन में यह विचार गूंज रहा था कि ईश्वर ने उन्हें दुनिया की संपत्ति नहीं दी, पर दुनिया का सबसे बड़ा धन दे दिया—दूसरों के दुख मिटाने की शक्ति। वही धन सर्वोच्च है, वही अमर है, वही मानवता की असली पहचान है।

सत्ता के संस्कार बदलने का अनुष्ठान

रायसीना हिल्स पर इन दिनों जो हो रहा है, वह साधारण नहीं है। वहां सिर्फ इमारतें नहीं बन रहीं, बल्कि एक पुरानी और जंग लगी मानसिकता ढह रही है। प्रधानमंत्री कार्यालय अब 'सेवा-तीर्थ' होगा और राजभवन 'लोक भवन'। लुटियंस दिल्ली के कुलीन हलकों में इसे लेकर सवाल है कि क्या यह सिर्फ नेमप्लेट बदलने की रस्म है? जवाब है- नहीं। यह उस औपनिवेशिक आत्मा से मुक्ति का अनुष्ठान है, जो आजादी के बाद भी हम पर हावी रही। शब्द सिर्फ बोलते नहीं, वे सोचते भी हैं। अंग्रेजों ने भारत पर सिर्फ बंदूक से राज नहीं किया, उन्होंने शब्दों से हमें गुलाम बनाया। उन्होंने खुद को 'शासक' और हमें 'प्रजा' माना। वह ढांचा 'हुकूमत' के लिए था, 'सेवा' के लिए नहीं।

जब पीएमओ 'सेवा-तीर्थ' बनता है, तो वह सत्ता के गलियारों में बैठे अफसर को याद दिलाता है कि वह मालिक नहीं, सेवक है। यह बदलाव ईंट-गारे का नहीं, उस 'लौह-ढांचे' को पिघलाने का है, जिसे हमने 75 साल तक ओढ़े रखा। यह भाषाई गुलामी के पिंजरे को तोड़ने की एक जरूरी और साहसिक शुरुआत है। इसे राजनीति नहीं, राष्ट्रनीति की नजर से देखिए। 'कलेक्टर' शब्द को देखिए। आखिर जिले के मुखिया को कलेक्टर क्यों कहा जाता है? इतिहास के पन्ने पलटेंगे तो जवाब वर्ष 1772 में मिलेगा। यह वारेन हेस्टिंग्स की ईजाद थी। उस वक्त मकसद 'जनसेवा' नहीं, सिर्फ लगान 'कलेक्ट' करना था। 'कलेक्टर' शब्द में 'लेने' का भाव है, 'देने' का नहीं। यह शब्द कुर्सी पर बैठने वाले के दिमाग में 'माई-बाप' होने का अहंकार भर देता है, जबकि हमारा संविधान 'कल्याणकारी राज्य' की बात करता है। कौटिल्य ने यूं ही प्रशासनिक प्रमुख के लिए 'समाहर्ता' शब्द नहीं चुना था। समाहर्ता यानी वह, जो बिखरे हुए को सहेजे, जो समाज के सूत्रों को जोड़े। अंग्रेज 'कलेक्टर' महज उगाही जानता था। इसके विपरीत भारतीय चिंतन के 'समाहर्ता' का मर्म 'पोषण' में है, प्रजा के योगक्षेम में है।

प्रधानमंत्री कार्यालय को 'सेवा-तीर्थ' कहना सत्ता का चरित्र-बदल की कोशिश है। 'सेवा-तीर्थ' सामंती मानसिकता पर चोट है। जब दफ्तर 'तीर्थ' बन जाता है, तो वहां झूठ बोलना या रिश्वत लेना अपराध नहीं 'पाप' हो जाता है। यह नैतिक दबाव है। यह सत्ता को 'भोग' से खींचकर 'सेवा'-'साधना' के धरातल पर लाता है। आलोचक इसे रंग दे सकते हैं, पर यह उस भारतीयता की वापसी है जहां सेवा परम धर्म है।

राजभवन को 'लोक भवन' कहना भी लोकतंत्र के आत्मा की वापसी जैसा है। संविधान की शुरुआत 'हम भारत के लोग' से होती है, 'हम भारत के राजा' से नहीं। जब बुनियाद 'लोक' है, तो इमारत 'राज' वाली क्यों? सामंती बोर्ड क्यों टंगे रहें? 'राजभवन' शब्द उस 'लाट-साहबी' दौर की याद है, जब शासक ऊंची हवेलियों में जनता से दूर रहता था। 'राज' शब्द शासक और शासित के बीच की खाई को गहरा करता है।

सरकार की नीयत साफ है और दिशा भी, लेकिन अभी जो हो रहा है, वह 'तदर्थवाद' है। कहीं कोई शहर का नाम बदल रहा है, कहीं कोई सड़क का। इसमें न कोई एकरूपता है, न वैज्ञानिक दृष्टि। इससे विवाद उपजते हैं। वक्त आ गया है कि इस प्रक्रिया को संस्थागत जामा पहनाया जाए। सरकार को एक वैधानिक 'राष्ट्रीय नामकरण एवं प्रशासनिक शब्दावली सुधार आयोग' का गठन करना चाहिए। नाम बदलना एक गंभीर सांस्कृतिक विमर्श होना चाहिए। इस आयोग में नेताओं की जगह इतिहासकार, भाषाविद और समाजशास्त्री बैठें। नाम बदलने की प्रक्रिया को 'राजनीतिक लाभ' के चश्मे से हटाकर 'सांस्कृतिक पुनर्जागरण' के रूप में स्थापित करना होगा।

भारत की एकता उसकी विविधता में है। अगर तमिलनाडु में बदलाव हो तो वहां 'कोट्टम' या 'नाडु' जैसे शब्द गूंजें। महाराष्ट्र में शिवाजी के 'अष्टप्रधान' की धमक हो। इससे न केवल गुलामी के निशान मिटेंगे, बल्कि क्षेत्रीय भाषाओं का स्वाभिमान भी लौटेगा। जिन्हें यह बदलाव 'संकीर्ण राष्ट्रवाद' लगता है, वे जरा दुनिया देखें। भारत अकेला नहीं है। यह एक वैश्विक शुद्धि यज्ञ है, जिसे दुनिया 'डीकोलोनाइजेशन' कहती है। दक्षिण अफ्रीका ने रंगभेद मिटने के बाद 'पोर्ट एलिजाबेथ' (अब गकेबरहा) जैसे कई शहरों के नाम बदले, ताकि वहां के मूल निवासियों को उनकी खोई हुई पहचान वापस मिल सके। न्यूजीलैंड अपनी माओरी संस्कृति को पुनर्स्थापित कर रहा है। अमेरिका भी इससे अछूता नहीं है। वहां उत्तरी अमेरिका के सबसे ऊंचे पर्वत 'माउंट मैकिंले' का नाम बदलकर, मूल निवासियों की पहचान 'डिनाली' कर दिया गया। नाम बदलना यह बताने का प्रयास है कि हमारे नायक 'क्लाइव' और 'डलहौजी' नहीं, बल्कि 'चाणक्य', 'तिरुवल्लुवर' और 'गांधी' हैं। नाम बदलना 'स्वत्व' की वापसी का शंखनाद है, जिसे भावुकता कहकर नकारा नहीं जा सकता, लेकिन सरकार को इस सत्य से भी आंखें मिलानी होंगी कि 'लकड़हारे की कुल्हाड़ी' केवल नाम से नहीं, अपनी धार से पहचानी जाती है। यदि 'कर्तव्य पथ' या 'लोक भवन' में बैठा तंत्र उसी औपनिवेशिक ठसक से ग्रस्त रहा, तो यह बदलाव अधूरा माना जाएगा। अफसर के मन से 'रूलर' होने का भ्रम मिटाना ही इस बदलाव की असली कसौटी है। चुनौती अब नाम की नहीं, व्यवस्था के डीएनए में भारतीयता के प्राण फूंकने की है।

अभियान

शिवखोड़ी का अविनाशी रहस्य और उस गुफा में बसे शिव के अनसुने चमत्कार

जम्मू–कश्मीर की पर्वतश्रृंखलाओं के बीच, घने जंगलों और दुर्गम पहाड़ियों के बीच एक ऐसी गुफा स्थित है, जिसके बारे में कहा जाता है कि वहां आज भी भगवान शिव का निवास है। यह गुफा केवल एक धार्मिक स्थल नहीं, बल्कि एक गूढ़ रहस्य है—ऐसा रहस्य जिसे जानकर मन में उत्सुकता भी जागती है और श्रद्धा भी। इस गुफा का नाम है शिवखोड़ी। स्थानीय लोग कहते हैं कि कैलाश पर्वत पर बसे शिव कहीं दूर नहीं, बल्कि इसी धरती पर, इसी गुफा के भीतर अपने परिवार के साथ निवास करते हैं। यह मान्यता हजारों वर्षों से चली आ रही है, और जो भी इस क्षेत्र में पला-बढ़ा है, वह अपने जीवन की शुरुआत से इस कथा को सुनता आया है।

कहा जाता है कि शिवखोड़ी वास्तव में एक विशाल सुरंग है, साधारण गुफा नहीं। इसके बारे में यह अद्भुत विश्वास प्रचलित है कि यह सुरंग अमरनाथ की पवित्र गुफा तक सीधे पहुंचाती है। दोनों गुफाओं के बीच का यह मार्ग इतना रहस्यमयी, इतना जटिल और इतना दुर्गम है कि आज तक कोई भी व्यक्ति इसके पार नहीं जा पाया। प्राचीनकाल में ऋषि, सिद्ध पुरुष, तपस्वी और संन्यासी इसी मार्ग से अमरनाथ की यात्रा करते थे, पर कलियुग में मानव अपनी साधना शक्ति से इतना दूर हो गया है कि इस गुफा में प्रवेश कर लौट पाना संभव ही नहीं रहा।

स्थानीय लोग एक स्वर में कहते हैं— "जो शिवखोड़ी की गुफा में अनजाने में भी अंदर चला जाता है, वह फिर कभी वापस नहीं आता।" ऐसा क्यों होता है? इसके रहस्य को कोई समझ नहीं पाया, परंतु श्रद्धा और भय दोनों ही इस गुफा के द्वार पर एक साथ खड़े रहते हैं।

यह गुफा लगभग 200 मीटर लंबी और 3 मीटर ऊंची है। भीतर प्रवेश करने पर ऐसा प्रतीत होता है मानो किसी प्राचीन मंदिर की गोद में आ गए हों। दीवारें प्राकृतिक आकृतियों से बनी हैं—कहीं मां पार्वती की छवि उभरती है, कहीं नंदी की प्राकृतिक प्रतिमा दिखाई देती है, और सबसे चकित कर देने वाली आकृति है छत पर बना शक्तिशाली नाग का रूप। ऐसा लगता है मानो शेषनाग स्वयं यहां अनंत प्रहरी बनकर बैठे हों।

इस गुफा में स्थित शिवलिंग भी उतना ही अद्भुत है। जैसे अमरनाथ में बर्फ से बना प्राकृतिक हिमलिंग हर वर्ष स्वयं आकार लेता है, उसी प्रकार शिवखोड़ी का शिवलिंग भी प्राकृतिक है। किसी शिल्पकार ने इसे बनाया हो—ऐसा कोई प्रमाण नहीं। यह चट्टानों से स्वयं बना है, जैसे प्रकृति ने अपने हाथों से शिव का स्वरूप तराश दिया हो। भक्तों का विश्वास है कि यह शिवलिंग उस समय का साक्षी है जब भगवान शिव यहां स्वयं उपस्थित रहे।

अब आते हैं उस पौराणिक कथा पर, जिसने इस गुफा को अनन्त दिव्यता दी। कथा भस्मासुर की है—वही राक्षस जिसने कठोर तप करके भगवान शिव को प्रसन्न किया था और उनसे ऐसा वरदान मांग लिया कि जिसका सिर वह छुएगा, वही भस्म हो जाएगा। भोलेनाथ अपनी सरलता के कारण उसे यह वरदान तो दे बैठे, लेकिन भस्मासुर की दुष्ट मंशा को समझ नहीं पाए। वरदान मिलते ही राक्षस ने उसी शक्ति से शिव को ही भस्म करने का प्रयास किया।

शिव और भस्मासुर के मध्य भयंकर युद्ध हुआ, पर राक्षस पीछे हटने वाला नहीं था। अंततः भगवान शिव को अपनी रक्षा के लिए एक ऊंची पहाड़ी पर शरण लेनी पड़ी और वहीं उन्होंने एक गुफा बनाई—वही गुफा आज शिवखोड़ी के नाम से प्रसिद्ध है। ऐसा माना जाता है कि इसी गुफा की गहराइयों में भगवान शिव ने स्वयं को छुपाया था, जब तक कि भगवान विष्णु ने मोहिनी रूप में भस्मासुर को भ्रमित कर उसके ही सिर पर उसका हाथ रखवा दिया और वह स्वयं ही भस्म हो गया।

शिवखोड़ी की इस कथा का हर शब्द, हर विवरण आज भी स्थानीय लोगों के लिए इतिहास की तरह सत्य है। यह गुफा आज भी दिनभर हजारों भक्तों से भरी रहती है। लोग दूर-दूर से आते हैं, माथा टेकते हैं, और मनोकामनाएं मांगते हैं। कहते हैं कि यहां यदि कोई सच्चे मन से मन्नत मांगे, यदि उसका मन छल-कपट से रहित हो, तो भगवान शिव उसकी हर इच्छा को पूर्ण करते हैं।

जम्मू की पहाड़ियों में बसे इस रहस्यमय स्थान पर आकर ऐसा अनुभव होता है कि प्रकृति, धर्म, आस्था और दिव्यता सभी एक ही स्थान पर एक साथ खड़े हैं। यही शिवखोड़ी है—एक ऐसी गुफा जहां समय रुक जाता है, सांसें शांत हो जाती हैं, और मन में बस एक ही भावना शेष रह जाती है—शिव ही सत्य हैं, शिव ही अनादि हैं, शिव ही अनंत हैं।

RNI No. GJHIN/25/A2786 Printed, Published & Owned by RAGINI JIGNESHKUMAR VAGHELA and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424. Editor : JIGNESHKUMAR PATHABHAI VAGHELA

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने महात्मा मंदिर में रीजनल एआई इम्पैक्ट कॉन्फ्रेंस का प्रारंभ कराया

-: मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल :-

- गुजरात ने टेक्नोलॉजी प्रेरित विकास में सदैव अग्रसरता बनाए रखी है
- एग्रीकल्चर, हेल्थ, गवर्नेंस, अर्बन-रूरल ट्रांसफॉर्मेशन पर चिंतन-मंथन विकसित गुजरात@2047 के विजन में नया बल देगा

-: उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी :-

- एआई केवल एक क्षेत्र नहीं; बल्कि नई ऊर्जा है, जो प्रत्येक क्षेत्र को गति के साथ शक्ति दे रही है, गुजरात एआई क्रांति का केन्द्र बनेगा
- निवेशकों तथा एआई स्टार्टअप्स के लिए गुजरात प्लेटफॉर्म बनेगा, उज्ज्वल भविष्य के लिए लॉन्च पैड बनेगा

उप मुख्यमंत्री तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री की उपस्थिति

प्रधानमंत्री की विजनरी लीडरशिप में एआई राष्ट्रीय प्रगति का मिशन बना है : मुख्यमंत्री

जन सुख-समृद्धि में वृद्धि, पारदर्शिता तथा फ्यूचर रेडी गुजरात के लिए एआई सक्षम संसाधन है : मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री ने गुजरात यूनिफाइड डिजिटल स्टैक को ऑपरेशनलाइज्ड कर डिजिटल गवर्नेंस को अधिक स्मार्ट, तेज तथा सिटीजन सेंट्रिक बनाने की मंशा व्यक्त की

'सुशासन' के लिए वर्तमान समय में एआई सबसे शक्तिशाली टूल्स के रूप में स्थापित : विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अर्जुन मोढवाडिया

मुख्यमंत्री के करकमलों से 'गुजरात एआई स्टैक' की लॉन्चिंग तथा 'गुजरात क्लाउड एडॉप्शन गाइडलाइन्स 2025' का अनावरण किया गया

गुजरात सरकार ने गूगल, भाषिणी, गिफ्ट सिटी तथा हेनोक्स के साथ एमओयू पर हस्ताक्षर किए

(जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने राज्यव्यापी गुजरात यूनिफाइड डिजिटल स्टैक को ऑपरेशनलाइज कर डिजिटल गवर्नेंस को अधिक स्मार्ट, तेज तथा सिटीजन सेंट्रिक बनाने की मंशा व्यक्त की है।

उन्होंने जोड़ा कि इसके परिणामस्वरूप नागरिकों को सभी सेवाएँ एक ही प्लेटफॉर्म से आसानी से मिलने के साथ विभागों के बीच डेटा शेयरिंग तेज बनने से योजनाओं के आउटकम का रीयल टाइम एनालिसिस भी हो सकेगा।

श्री पटेल गुरुवार को गांधीनगर स्थित महात्मा मंदिर में आयोजित हो रही रीजनल एआई इम्पैक्ट कॉन्फ्रेंस का प्रारंभ कराते हुए संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कॉन्फ्रेंस अंतर्गत आयोजित एआई एक्सपीरियेंस जोन का उद्घाटन कर विभिन्न स्टार्टअप स्टॉल्स का निरीक्षण किया। इस समारोह में उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अर्जुन मोढवाडिया उपस्थित रहे।

इस कॉन्फ्रेंस का आयोजन केन्द्र सरकार के सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय तथा राज्य सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के उपक्रम से प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत में फरवरी-2026 में आयोजित होने वाली एआई इम्पैक्ट समिट के पूर्वार्ध तथा प्री-इवेंट के रूप में किया गया है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने इस अवसर पर गुजरात एआई स्टैक लॉन्च किया। इस एआई स्टैक के लॉन्च होने से सरकारी विभागों में 'प्लग-एंड-प्ले' एआई अपनाने के लिए 6 प्रमुख एआई टूल्स – कृषि एआई, योजना की पात्रता जाँच, प्रोक्योरमेंट चैटबोट, ग्रीवेंस क्लासीफायर, डॉक्यूमेंट एक्स्ट्रैक्टर तथा चैट मैनेजमेंट टूल से गवर्नेंस अधिक तेज, सटीक तथा नागरिकोन्मुखी बनेगा।

गुजरात क्लाउड एडॉप्शन गाइडलाइन्स 2025 भी महानुभावों ने लॉन्च की। राज्य के डिजिटल गवर्नेंस को अधिक सुरक्षित, स्केलेबल तथा एआई रेडी बनाने के लिए ये गाइडलाइन्स 2025 में उपयोगी सिद्ध होंगी और Meity एम्पैनल्ड कम्प्यूट का उपयोग आसान बनेगा।

इस कॉन्फ्रेंस में दो महत्वपूर्ण एमओयू पर हस्ताक्षर किए गए। इनमें गुजरात सरकार - गूगल और भाषिणी के बीच हुए एमओयू के अनुसार बहुभाषीय एआई, गुजराती भाषा मॉडलों और डिजिटल पब्लिक सर्विसेज के लिए रणनीतिक भागीदारी की जाएगी।

इतना ही नहीं; गुजरात सरकार – गिफ्ट सिटी तथा हेनोक्स द्वारा राज्य में केबल लैंडिंग स्टेशन्स (सीएलएस) स्थापित करने के लिए एमओयू किया गया। इससे गुजरात वैश्विक डिजिटल कनेक्टिविटी का केन्द्र बनेगा तथा ग्रीन डेटा सेंटर्स को बल प्रदान करेगा।

मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर कहा कि प्रधानमंत्री की लीडरशिप में एआई केवल टेक्नोलॉजी का संसाधन नहीं, बल्कि राष्ट्रीय प्रगति का मिशन बन गया है। गुजरात ने सदैव टेक्नोलॉजी प्रेरित विकास में अग्रसरता बनाए रखी है। उन्होंने जोड़ा कि जन सुख-समृद्धि में वृद्धि, पारदर्शिता तथा फ्यूचर रेडी गुजरात के लिए एआई सक्षम संसाधन है। श्री पटेल ने कहा कि प्रधानमंत्री की विजनरी लीडरशिप में देश में गत एक दशक में बहुत बड़े बदलाव आए हैं। छोटे से छोटे व्यक्ति तक टेक्नोलॉजी पहुँची है और इंडिया एआई मिशन शुरू हुआ है। गुजरात ने भी इसके अनुरूप रहकर टास्क फोर्स का गठन किया है।

उन्होंने अपेक्षा दर्शाई कि इस रीजनल एआई इम्पैक्ट कॉन्फ्रेंस में होने वाला सामूहिक मंथन एआई के उपयोग द्वारा टेक्नोलॉजी की मदद से आज के कार्यों से आने वाले कल की क्षमता के दृष्टिकोण को बदलने में उपयोगी बनेगा।

उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी

उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी ने गुजरात को एआई क्रांति का निर्माण करने वाला राज्य बताया और निवेशकों तथा एआई स्टार्टअप्स का गुजरात में स्वागत किया।

श्री संघवी ने कहा कि गुजरात सदैव 'अतिथि' तथा 'इनोवेशन' – इन दो शक्तिशाली परिबलों का स्वागत करता आया है। हमारा लक्ष्य ह्यूमन वर्सेज मशीन नहीं, बल्कि ह्यूमन विद मशीन है, जहाँ मानव कल्पना ने एक ऐसे पार्टनर का निर्माण किया है, जो कल्पना भी कर सकता है। एआई अब केवल एक क्षेत्र नहीं, बल्कि नई ऊर्जा है, जो प्रत्येक क्षेत्र को गति के साथ शक्ति दे रही है।

उन्होंने गुजरात में विभिन्न क्षेत्रों में हो रहे एआई आधारित उपयोगों पर प्रकाश डालते हुए जोड़ा कि गिफ्ट सिटी में माइक्रोसॉफ्ट के सहयोग से स्थापित एआई सेंटर ऑफ एक्सीलेंस (सीओई) भारत के आगामी टेक इकोसिस्टम को आकार दे रहा है। यह हेल्थकेयर, मैन्युफैक्चरिंग तथा शिक्षा जैसे क्षेत्रों में गति दे रहा है। गुजरात में कृषि क्षेत्र में फसल एआई प्लेटफॉर्म द्वारा किसानों को पानी की बचत करने तथा कीटाणुनाशकों का उपयोग कम करने में मदद मिल रही है। कृषि प्रगति प्लेटफॉर्म पर एक लाख से अधिक किसानों को फसल के स्वास्थ्य, भूमि की स्थिति तथा जल की उपलब्धता के बारे में एआई आधारित सलाह मिल रही है, जो उनकी आय बढ़ाने में सहायक है। इसके अतिरिक्त; सिम्बा-एसआईएमबीए प्रोजेक्ट द्वारा वन्यजीवों की रक्षा की जा रही है। सार्वजनिक परिवहन सेवा जीएसआरटीसी में भी कार्यक्षमता सुधारने के लिए एआई का उपयोग किया जा रहा है।

श्री संघवी ने गुजरात पुलिस द्वारा नागरिक सुरक्षा के लिए एआई टेक्नोलॉजी के किए गए उपयोग के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि अहमदाबाद में आयोजित होने वाली भगवान जगन्नाथजी की रथयात्रा में पुलिस ने एआई सर्वेलांस के जरिए 5,481 गुमशुदा बच्चों को खोजकर उनका परिवार से पुनर्मिलन कराया। इतना ही नहीं, सुदूरवर्ती तथा ट्राइबल क्षेत्र माने जाने वाले दाहोद जिले में पुलिस ने अवैध गांजे की खेती के विरुद्ध राज्य का पहला एआई आधारित ऑपरेशन चलाया। मशीन-लर्निंग मॉडलों ने गांजे के पौधों को पहचाना और ड्रोन सर्वेलांस से 1.19 करोड़ रुपए से अधिक मूल्य का गांजा पकड़ा। इसके अलावा, अंबाजी मेले में एआई सर्वेलांस ने संदिग्ध गतिविधियों को ट्रैक कर गुमशुदा व्यक्तियों को खोजा तथा भीड़ प्रबंधन को मजबूत बनाया। श्री हर्ष संघवी ने सभी निवेशकों और एआई स्टार्टअप्स को गुजरात में निवेश करने, निर्माण करने तथा अपने सपने साकार करने के लिए आमंत्रण दिया। उन्होंने कहा, "गुजरात आपका प्लेटफॉर्म बनेगा। गुजरात आपके भविष्य का लॉन्च पैड बनेगा।"

ज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अर्जुन मोढवाडिया ने कहा कि सुशासन के लिए वर्तमान समय में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस – एआई सबसे शक्तिशाली टूल्स के रूप में स्थापित हुआ है। मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में गुजरात एआई क्षेत्र में अग्रसर रहा है। एआई के माध्यम से टेक्नोलॉजी, डेटा स्टोरेज, दैनिक कार्य में तेजी और पारदर्शिता आई है, जिसके परिणामस्वरूप नागरिकों को घर बैठे सुविधा देने सहित विभिन्न सेवाओं में बड़ा परिवर्तन आया है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में भारत एआई तकनीक में नई ऊँचाइयाँ छू रहा है। पुरानी और नई पीढ़ी रेडियो, टीवी, कंप्यूटर और अब एआई तकनीक क्षेत्र में आने वाले बदलाव की साक्षी बनी है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि गुजरात में आयोजित यह 'रीजनल एआई इम्पैक्ट कॉन्फ्रेंस' भविष्य में एआई क्षेत्र में नई क्रांति लाएगी। MeitY के अपर सचिव और एनआईसी के महानिदेशक श्री अभिषेक सिंह ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के दिशानिर्देशन में भारत में आगामी फरवरी 2026 में 'एआई इम्पैक्ट समिट' आयोजित होगी। विश्व में पहली बार किसी विकासशील देश में वैश्विक स्तर की एआई समिट आयोजित होगी। इस समिट को अधिक सार्थक बनाने के लिए प्रधानमंत्री ने प्रत्येक राज्य में भी रीजनल एआई इम्पैक्ट कॉन्फ्रेंस आयोजित करने का आह्वान किया था, जिसके परिणामस्वरूप आज यह कॉन्फ्रेंस आयोजित हो रही है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि नई टेक्नोलॉजी के क्रियान्वयन में गुजरात हमेशा देश में लीड लेकर अग्रसर रहा है। अब एआई के क्षेत्र में भी गुजरात देश के लिए रोल मॉडल बनेगा। इस रीजनल कॉन्फ्रेंस में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग की सचिव श्रीमती पी. भारती ने स्वागत संबोधन में एक दिवसीय कॉन्फ्रेंस के अंतर्गत आयोजित होने वाले विभिन्न थीमैटिक सत्रों की विस्तृत भूमिका देते हुए कहा कि इस कॉन्फ्रेंस के दौरान एआई फॉर एग्रीकल्चर, हेल्थकेयर, गवर्नेंस, अर्बन- रूरल ट्रांसफॉर्मेशन और फिन-टेक जैसे पाँच विषयों पर राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय विशेषज्ञों के साथ चर्चा की जाएगी तथा वर्ष 2026 में आयोजित होने वाली 'एआई इम्पैक्ट समिट' के लिए मूल्यवान सिफारिशें भी की जाएंगी। कार्यक्रम के अंत में गुजरात इन्फॉर्मेटिक्स लिमिटेड के प्रबंध निदेशक श्री अरविंद विजयन ने आभार व्यक्त किया। रीजनल एआई इम्पैक्ट कॉन्फ्रेंस में राजस्व विभाग की अपर मुख्य सचिव डॉ. जयंती रवि, गिफ्ट सिटी के प्रबंध निदेशक श्री संजय कौल, शारजाह कम्युनिकेशन्स टेक्नोलॉजीस ऑथोरिटी के कार्यपालक निदेशक श्री राशिद अली अल-अली, गुजकोस्ट के सलाहकार श्री नरोत्तम साहू, भारत और गुजरात सरकार के वरिष्ठ अधिकारी, वैश्विक टेक कंपनियाँ, आईआईटी, उद्योग जगत के विशेषज्ञ तथा 100 से अधिक स्टार्टअप्स से जुड़े इनोवेटर्स उपस्थित रहे ।

आणंद जिले के धुवारण में कार्यरत होगा केबल लैंडिंग स्टेशन प्रोजेक्ट

गांधीनगर में आयोजित रीजनल एआई इम्पैक्ट कॉन्फ्रेंस में मुख्यमंत्री तथा उप मुख्यमंत्री की उपस्थिति में एमओयू हुआ

-: महात्मा मंदिर में वन टू वन बैठक आयोजित :-

- प्रोजेक्ट में 1317 करोड़ रुपए का संभावित निवेश होगा तथा 1300 से अधिक प्रत्यक्ष-परोक्ष रोजगार अवसर उपलब्ध होंगे

सीएलएस की स्थापना से डेटा सेंटर और आईटी इन्फ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट में वृद्धि होगी

गुजरात हाइपर स्केल और एंटरप्राइज डेटा सेंटर के लिए पसंदीदा स्थान बनेगा

राज्य सरकार – गिफ्ट सिटी और हेनोक्स आईटी एंड डेटा सेंटर्स के बीच एमओयू

गांधीनगर : गुजरात में डेटा सेंटर और आईटी इन्फ्रास्ट्रक्चर विकास में वृद्धि कर हाइपर स्केल और एंटरप्राइज डेटा सेंटर के लिए गुजरात को डेस्टिनेशन ऑफ चॉइस बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया गया है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल तथा उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी की उपस्थिति में इस उद्देश्य से गांधीनगर के महात्मा मंदिर में राज्य सरकार, गिफ्ट सिटी और शारजाह की हेनोक्स आईटी एंड डेटा सेंटर्स प्राइवेट लिमिटेड के बीच एमओयू किया गया।

यह डेटा केबल लैंडिंग स्टेशन प्रोजेक्ट लगभग 1317 करोड़ रुपए के संभावित निवेश के साथ आणंद जिले के धुवारण में आकार लेगा और प्रत्यक्ष-परोक्ष मिलाकर 1300 से अधिक रोजगार अवसरों का सृजन होगा।

गांधीनगर में आयोजित हो रही रीजनल एआई इम्पैक्ट कॉन्फ्रेंस में शामिल होने आए हेनोक्स आईटी के सीईओ मसूद एम. शरीफ महमूद तथा शारजाह कम्युनिकेशन्स टेक्नोलॉजीस ऑथोरिटी (एससीटीए) के कार्यपालक निदेशक श्री राशिद अल- अली एवं यूएई के भारत स्थित राजदूत डॉ. अब्दुल नासिर जमाल अलशाली ने यह एमओयू करने के बाद मुख्यमंत्री, उपमुख्यमंत्री तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री से मुलाकात बैठक आयोजित की।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने विश्वास व्यक्त किया कि इस सीएलएस प्रोजेक्ट के परिणामस्वरूप आने वाले दिनों में गुजरात में तेज और मजबूत अंतरराष्ट्रीय कनेक्टिविटी से एआई, मशीन लर्निंग, स्टार्टअप प्लेटफॉर्म और जीसीसी के विकास को गति मिलेगी।

उन्होंने इस मुलाकात बैठक के दौरान कहा कि इतना ही नहीं, वैश्विक डेटा ट्रैफिक के लिए गुजरात महत्वपूर्ण प्रवेश द्वार – गेट-वे बनेगा और देश की डिजिटल इंडिपेंडेंसी क्षमता मजबूत होगी।

हेनोक्स आईटी एंड डेटा सेंटर्स के सीईओ ने इस केबल लैंडिंग स्टेशन के महत्व के बारे में कहा कि यह सेंटर भारत और वैश्विक इंटरनेट इन्फ्रास्ट्रक्चर को जोड़ने वाले महत्वपूर्ण मॉडल के रूप में काम करेगा। यह सेंटर स्मार्ट सिटीज के लिए उच्च बैंडविड्थ आवश्यकता वाली एप्लिकेशन्स के लिए बैकबोन के रूप में भी सेवाएं प्रदान करेगा।

इस बैठक में राजस्व विभाग की अपर मुख्य सचिव डॉ. जयंती रवि, उद्योग विभाग की प्रधान सचिव श्रीमती ममता वर्मा, मुख्यमंत्री की अपर प्रधान सचिव श्रीमती अवंतिका सिंह, मुख्यमंत्री के सचिव डॉ. विक्रांत पांडे, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग की सचिव श्रीमती पी. भारती आदि उपस्थित रहे।

पश्चिम रेलवे ने मनाया सिविल डिफेन्स वार्षिक दिवस - 2025

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री विवेक कुमार गुप्ता द्वारा महालक्ष्मी, मुंबई में आयोजित वार्षिक दिवस कार्यक्रम के दौरान रेल अधिकारियों, सिविल डिफेन्स स्वयंसेवकों, कर्मचारियों एवं उनके परिजनों को संबोधित करते हुए तथा औपचारिक परेड का निरीक्षण करते हुए; सिविल डिफेन्स के उपकरणों और साधनों की प्रदर्शनी।

पश्चिम रेलवे सिविल डिफेन्स संगठन द्वारा सिविल डिफेन्स वार्षिक दिवस का आयोजन गुरुवार, 11 दिसम्बर, 2025 को पश्चिम रेलवे स्पोर्ट्स ग्राउंड, महालक्ष्मी में किया गया। इस अवसर पर पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री विवेक कुमार गुप्ता ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की तथा सिविल डिफेन्स ध्वज फहराया। उन्होंने उपस्थित रेल अधिकारियों, सिविल डिफेन्स स्वयंसेवकों, कर्मचारियों और उनके परिजनों को संबोधित किया तथा स्वयंसेवकों को सामुदायिक क्षमता–निर्माण एवं संकट की स्थिति में लोगों

की सहायता हेतु निरंतर योगदान देने का आवाहन किया।

मुख्य जनसंपर्क अधिकारी, पश्चिम रेलवे, श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, कार्यक्रम की शुरुआत नौ टुकड़ियों की एक औपचारिक परेड से हुई, जिसमें एक सर्व–महिला टुकड़ी भी शामिल थी। इसके बाद सिविल डिफेन्स स्वयंसेवकों द्वारा विभिन्न आपातकालीन परिस्थितियों—जैसे हवाई हमले एवं बम विस्फोट—के दौरान अपनाई जाने वाली बचाव एवं राहत तकनीकों का प्रदर्शन किया गया। कोच के अंदर लगी आग को बुझाने की प्रक्रिया प्रदर्शित करने हेतु फायर–बॉल का उपयोग करते हुए एक विशेष अग्निशमन ड्रिल भी आयोजित की गई। रेलवे परिसरों में स्वच्छता बनाए रखने और ट्रेसपासिंग की रोकथाम के महत्व का संदेश देने के लिए एक नुक्कड़ नाटक भी प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम स्थल पर सिविल डिफेन्स उपकरणों, साधनों एवं तैयारियों को दर्शाती एक प्रदर्शनी भी लगाई गई, जो पश्चिम रेलवे की मजबूत सिविल डिफेन्स क्षमताओं को प्रतिबिंबित करती है।

अपने संबोधन में पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री विवेक कुमार गुप्ता ने सिविल डिफेन्स स्वयंसेवकों की निष्ठा, समर्पण एवं सेवाभाव की सराहना की तथा उन्हें सामुदायिक क्षमता–निर्माण और आपातकालीन सहायता में निरंतर योगदान देने के लिए प्रोत्साहित किया। इस अवसर पर भारत के माननीय राष्ट्रपति का संदेश भी पढ़ा गया। कार्यक्रम का आयोजन पश्चिम रेलवे के उप महाप्रबंधक (जी) एवं नियंत्रक, सिविल डिफेन्स, श्री उज्ज्वल देव के मार्गदर्शन में किया गया।

पश्चिम रेलवे सिविल डिफेन्स की तैयारियों को और अधिक सुदृढ़ करने तथा रेलवे नेटवर्क में सुरक्षा, लचीलापन एवं सामुदायिक सहयोग की संस्कृति को बढ़ावा देने के अपने संकल्प की पुनः पुष्टि करता है।

अजमेर मण्डल के मदार-पालनपुर सेक्शन में आरसीसी बॉक्स लांचिंग कार्य हेतु ब्लॉक के कारण कुछ ट्रेनें प्रभावित रहेगी

उत्तर पश्चिम रेलवे के अजमेर मण्डल के मदार-पालनपुर रेलखण्ड पर जवाली व रानी स्टेशनों के बीच ब्रिज संख्या 632 पर आरसीसी बॉक्स लांचिंग को लेकर 12 दिसंबर 2025 को ब्लॉक लिया गया है। इस ब्लॉक के कारण कुछ ट्रेनें प्रभावित रहेगी। जिसका विवरण निम्नानुसार है:

पूर्णतः रद्द ट्रेनें

12 व 13 दिसंबर 2025 की ट्रेन संख्या 14822 साबरमती-जोधपुर एक्सप्रेस रद्द रहेगी।

11 व 12 दिसंबर 2025 की ट्रेन संख्या 14821 जोधपुर-साबरमती एक्सप्रेस रद्द रहेगी।

रिशेड्यूल ट्रेनें

1. 12 दिसंबर 2025 की ट्रेन संख्या 19223 साबरमती-जम्मूतवी एक्सप्रेस साबरमती से अपने निर्धारित समय से 01 घंटे 45 मिनट की देरी से प्रस्थान करेगी।
2. 12 दिसंबर 2025 की ट्रेन संख्या 19031 साबरमती-योगनगरी ऋषिकेश योगा एक्सप्रेस साबरमती से अपने निर्धारित समय से 01 घंटे की देरी से प्रस्थान करेंगी।
3. 11 दिसंबर 2025 की ट्रेन संख्या 14701, श्रीगंगानगर-बान्द्रा टर्मिनस अरावली एक्सप्रेस श्रीगंगानगर से अपने निर्धारित समय से 04 घंटे की देरी से प्रस्थान करेगी।
4. 12 दिसंबर 2025 की ट्रेन संख्या 14707, हनुमानगढ-दादर रणकपुर एक्सप्रेस हनुमानगढ से अपने निर्धारित समय से 01 घंटे की देरी से प्रस्थान करेगी।
5. 12 दिसंबर 2025 की ट्रेन संख्या 09084 भगत की कोठी-मुंबई सेंट्रल स्पेशल भगत की कोठी से अपने निर्धारित समय से 03 घंटे की देरी से प्रस्थान करेगी।

मार्ग परिवर्तित ट्रेनों

11 दिसंबर 2025 को बान्द्रा टर्मिनस से चलने वाली ट्रेन संख्या 20943 बान्द्रा टर्मिनस-भगत की कोठी एक्सप्रेस निर्धारित मार्ग महेसाणा-मारवाड़ जं.-लूनी के स्थान पर परिवर्तित मार्ग वाया महेसाणा-भीलड़ी-लूनी के रास्ते चलेगी।

11 दिसंबर 2025 को हडपसर से चलने वाली ट्रेन संख्या 20496 हडपसर-जोधपुर एक्सप्रेस निर्धारित मार्ग महेसाणा-मारवाड़ जं.-लूनी के स्थान पर परिवर्तित मार्ग वाया महेसाणा-भीलड़ी-लूनी के रास्ते चलेगी।

ट्रेनों के ठहराव, समय और संरचना के संबंध में विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

गुजरात की सीवीड क्रांति पर आगामी VGRC में रहेगा विशेष फोकस; कच्छ ने 2023-24 दर्ज किया 14 टन सीवीड उत्पादन

- 430 किमी लंबे तटीय क्षेत्र में सीवीड खेती का तेजी से विस्तार, कच्छ से लेकर देवभूमि द्वारका तक नया विकास कॉरिडोर
- कच्छ के 17 गांवों में प्रशिक्षण पूरा, और 5 जिलों में नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रम जारी
- ट्यूब-नेट यूनिट की लागत 8,000 से बढ़ाकर 25,000 रुपये, तटीय किसानों को मिलेगा सीधा लाभ

गांधीनगर : गुजरात सरकार ने कच्छ और सौराष्ट्र क्षेत्र के लिए वाइब्रेंट गुजरात रीजनल कॉन्फ्रेंस (VGRC) के दूसरे संस्करण की घोषणा की है। यह सम्मेलन 10 से 12 जनवरी 2026 तक राजकोट में आयोजित होगा। इसी के साथ वाइब्रेंट गुजरात रीजनल एग्जिबिशन (VGRE) 10 से 13 जनवरी 2026 तक उसी स्थल पर आयोजित की जाएगी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विकसित भारत के दृष्टिकोण और मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल के विकसित गुजरात संकल्प के अनुरूप, यह आयोजन क्षेत्र के उद्योगों, MSMEs, सरकारी संस्थानों और उद्यमियों को एक मजबूत मंच प्रदान करेगा।

VGRC के इस संस्करण में कच्छ में समुद्री शैवाल (सीवीड) खेती की तेजी से बढ़ती सफलता पर विशेष ध्यान केंद्रित किया जाएगा। कच्छ के समुद्री तट से लेकर देवभूमि द्वारका के गहरे जल क्षेत्रों तक फैले लगभग 430 किलोमीटर के तटीय विस्तार में सीवीड की खेती अत्यंत तेज़ी से उभरता हुआ क्षेत्र बनी है जो तटीय आजीविका को सुदृढ़ कर रही है और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा प्रोत्साहित ब्लू इकोनॉमी को नई ऊर्जा प्रदान कर रही है।

सीवीड क्या है और इसके उपयोग क्या हैं?

सीवीड एक प्रकार की समुद्री शैवाल है, जिसका उपयोग सदियों से भोजन और औषधीय उद्देश्यों के लिए होता आया है। विटामिन, खनिज (विशेष रूप से आयोडीन), फाइबर और एंटीऑक्सिडेंट से भरपूर यह समुद्री पौधा आंतों के स्वास्थ्य, हृदय स्वास्थ्य, थायरॉयड कार्यक्षमता और वजन प्रबंधन में सहायक माना जाता है। यह पोषक तत्वों से भरपूर खाद्य सामग्री होने के साथ-साथ एक फंक्शनल इंग्रेडिएंट भी है, जिसमें सूजन-रोधी, कैंसर-रोधी और रक्त शर्करा नियंत्रित करने वाले तत्व पाए जाते हैं। प्रधानमंत्री मोदी द्वारा प्रचारित प्राकृतिक और पोषक खाद्य सुरक्षा मिशन में सीवीड को भविष्य का सुपरफूड माना जा रहा है।

तटीय समुदायों के लिए सीवीड खेती का विशेष प्रशिक्षण

गुजरात में सीवीड उत्पादन लगातार बढ़ रहा है और यह तटीय समुदायों के लिए एक महत्वपूर्ण सहारा बन रहा है। मानसून के दौरान मछली पकड़ने पर प्रतिबंध की अवधि में सीवीड खेती आय का प्रमुख स्रोत बन जाती है। वर्ष 2023–24 में केवल कच्छ में 14 टन सीवीड का उत्पादन हुआ। महिला स्वयं सहायता समूह (SHGs) खेती और ड्राइंग कार्यों से प्रति माह 12,000 से 18,000 रुपये तक की कमाई कर रहे हैं। यह क्षेत्र युवाओं को पर्यावरण-अनुकूल और स्थायी आजीविका की ओर आकर्षित कर रहा है। इस बढ़ते क्षेत्र को समर्थन देने हेतु कच्छ के 17 गांवों में प्रशिक्षण दिया जा चुका है तथा कच्छ, देवभूमि द्वारका, गिर सोमनाथ, जूनागढ़ और मोरबी में नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित हो रहे हैं।

सीवीड को मेरिकल्चर विज़न का मुख्य स्तंभ मानते हुए हुए कई व्यापक सुधार

प्रधानमंत्री मोदी की ब्लू इकॉनॉमी रणनीति के अनुरूप, गुजरात सरकार ने विकसित गुजरात फंड के तहत कई महत्वपूर्ण सुधार लागू किए हैं। इस पहल के अंतर्गत खेती से लेकर प्रोसेसिंग तक एक समग्र पारिस्थितिकी तंत्र तैयार किया गया है। राफ्ट यूनिट पर खर्च सीमा 3,000 रुपये से बढ़ाकर 6,000 रुपये और ट्यूब-नेट यूनिट की लागत 8,000 रुपये से बढ़ाकर 25,000 रुपये कर दी गई है।

पश्चिम रेलवे चलाएगी उर्स उत्सव के दौरान बांद्रा टर्मिनस और अजमेर के बीच सुपरफास्ट स्पेशल ट्रेन

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे द्वारा अजमेर उर्स उत्सव के दौरान यात्रियों की मांग एवं सुविधा को ध्यान रखते हुए बांद्रा टर्मिनस–अजमेर स्टेशन के बीच विशेष किराए पर स्पेशल ट्रेन चलायी जाएगी। इस ट्रेन का विवरण इस प्रकार है:

ट्रेन संख्या 09063/09064 बांद्रा टर्मिनस – अजमेर सुपरफास्ट स्पेशल [02 फेरे]

ट्रेन संख्या 09063 बांद्रा टर्मिनस – अजमेर स्पेशल बुधवार, 24 दिसंबर, 2025 को 12:15 बजे बांद्रा टर्मिनस से प्रस्थान करेगी और अगले दिन 06:15 बजे अजमेर पहुंचेगी। इसी तरह, ट्रेन संख्या 09064 अजमेर – बांद्रा टर्मिनस स्पेशल गुरुवार, 25 दिसंबर, 2025 को 11:40 बजे अजमेर से प्रस्थान करेगी और अगले दिन 04:20 बजे बांद्रा टर्मिनस पहुंचेगी।

यह ट्रेन दोनों दिशाओं में बोरीवली, पालघर, वापी, वलसाड, सूरत, भरूच, वडोदरा, आणंद, नडियाद, साबरमती, महेसाणा, पालनपुर, आबू रोड, पिण्डवाड़ा, फालना, रानी, मारवाड़, सोजत रोड और ब्यावर स्टेशनों पर रुकेगी। इस ट्रेन में AC - 2 टियर, AC - 3 टियर, स्लीपर क्लास और जनरल सेकंड क्लास कोच होंगे।

ट्रेन संख्या 09063 के लिए बुकिंग 12 दिसंबर 2025 से सभी PRS काउंटरों और IRCTC वेबसाइट पर शुरू होगी। ट्रेनों के ठहराव, समय एवं संरचना से संबंधित विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने बनासकाँठा को 1004 करोड़ रुपए के विकास कार्यों की भेंट दी

बनासकाँठा के सर्वांगीण विकास के लिए प्रधानमंत्री तथा मुख्यमंत्री निरंतर प्रयत्नशील हैं : गुजरात विधानसभा के अध्यक्ष श्री शंकरभाई चौधरी

-: मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल :-

- प्रधानमंत्री की विजनरी लीडरशिप का लाभ गुजरात को ढाई दशक से मिल रहा है
- प्रधानमंत्री के नौ संकल्पों द्वारा विकसित भारत का संकल्प साकार करें

गांधीनगर, 11 दिसंबर : बनासकाँठा जिले में शुक्रवार को विकास का महापर्व मनाया गया। मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने 1000 करोड़ रुपए से अधिक के विभिन्न विकास कार्यों का लोकार्पण तथा शिलान्यास कर जिलावासियों को भव्य भेंट दी।

श्री पटेल ने बनासकाँठा के 7 से अधिक विकास कार्यों का लोकार्पण तथा 15 से अधिक बड़ी परियोजनाओं का शिलान्यास करने के साथ वाव-थराद-बनासकाँठा जिले में नोबेल प्राइज एग्जीबिशन का भी उद्घाटन किया। यह प्रदर्शनी बच्चों में विज्ञान एवं प्रतियोगी परीक्षा के प्रति उत्साह जागृत करेगी। मुख्यमंत्री ने रामलीला मैदान से 'सशक्त नारी मेला' का प्रारंभ किया और स्वयं-सहायता समूहों की बहनों के साथ संवाद भी किया। शुक्रवार से शुरू हुए ये राज्यव्यापी स्वदेशी मेले प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के 'स्वदेशी उत्पादों को प्रोत्साहन' अभियान को और गति देंगे।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा कि विश्व के सर्वाधिक लोकप्रिय नेता एवं यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने सबके साथ, सबके विकास, सबके विश्वास और सबके प्रयास की राजनीति से सर्वांगीण विकास किया है। उनकी विजनरी लीडरशिप का जो लाभ ढाई दशक से राज्य को मिला है, उसमें अनेक मील के पत्थर पार हुए हैं। उनके दिशादर्शन में गुजरात दिन-प्रतिदिन तेजी से प्रगति कर रहा है।

श्री पटेल ने कहा कि विश्व का सबसे बड़ा रिन्यूएबल एनर्जी पार्क गुजरात में बन रहा है। एशिया की सबसे बड़ी ग्रीनफील्ड सिटी धोलेरा में डेवलप हो रही है। भारत का सबसे लंबा एक्सप्रेसवे 'सूरत-चेन्नई एक्सप्रेसवे' गुजरात से शुरू होता है। भारत का प्रथम अंतरराष्ट्रीय वित्तीय केन्द्र गिफ्ट सिटी-गुजरात में है। देश की प्रथम बुलेट ट्रेन भी गुजरात से शुरू होगी।

उन्होंने कहा कि मोदी साहब के नेतृत्व के चलते कल ही संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) ने दीपावली के पर्व को अमूर्त धरोहर के रूप में घोषित किया है, तो इससे पहले हमारा गरबा भी यह गौरव प्राप्त कर चुका है।

मुख्यमंत्री ने आगे कहा कि प्रधानमंत्री के नौ संकल्पों के माध्यम से हम राष्ट्रप्रेम तथा देश के लिए कुछ करने की भावना जागृत करें। 'कैच द रेन', 'एक पेड़ माँ के नाम', 'स्वच्छता' जैसे अभियानों को हम अपनी आदत बनाएँ। प्राकृतिक खेती तथा गाय आधारित खेती अपनाएँ और स्वस्थ जीवनशैली के लिए योग एवं खेल-कूद को जीवन का हिस्सा बनाएँ। उन्होंने स्वदेशी मेलों के गुजरात को आत्मनिर्भर बनाने तथा स्वदेशी को प्रोत्साहन देने के प्रेरक बल बनने की भूमिका देते हुए कहा कि प्रधानमंत्री ने विकसित भारत@2047 का लक्ष्य रखा है, जिसमें गुजरात भी आत्मनिर्भर एवं विकसित गुजरात से योगदान देने के लिए सज्ज है। इस अवसर पर विधानसभा के अध्यक्ष श्री शंकरभाई चौधरी ने कहा कि वर्षों की समस्या का निवारण आया है। बनासकाँठा को बहुत बड़ी भेंट मिली है। उन्होंने इस भेंट के लिए मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल का आभार व्यक्त किया। श्री चौधरी ने कहा कि सूखे-वीरान बनासकाँठा में नर्मदा की नहर लाकर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने बनासकाँठा को हरियाला बनाते हुए विकास की शुरुआत की थी, जिसे मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने आगे बढ़ाते हुए करोड़ों रुपए की लागत से पाइपलाइनें डालकर बनासकाँठा के तालाब भरने का कार्य किया है। जिले को पानी की समस्या से हमेशा के लिए मुक्ति दिलाने का राज्य सरकार ने दृढ़ आयोजन किया है।

कार्यक्रम में केबिनेट मंत्री श्री कुँवरजीभाई बावळिया, बनासकाँठा जिला प्रभारी मंत्री श्री कमलेशभाई पटेल, मंत्री श्री प्रवीणभाई माळी, मंत्री श्री संजयसिंह महिडा, मंत्री श्री स्वरूपजी ठाकोर, विधायक श्री अनिकेत ठाकर, विधायक श्री लविंगजी ठाकोर, जिला कलेक्टर श्री मिहिर पटेल, जिला विकास अधिकारी श्री एम. जे. दवे, जिला पुलिस अधीक्षक श्री प्रशांत सुंबे सहित अधिकारी तथा बड़ी संख्या में लोग उपस्थित रहे।

पश्चिम रेलवे चलाएगी बांद्रा टर्मिनस दुर्गापुरा के बीच सुपरफास्ट स्पेशल ट्रेन

यात्रियों की सुविधा तथा यात्रा की बढ़ती मांग को पूरा करने एवं अतिरिक्त भीड़ को नियंत्रित करने के उद्देश्य से पश्चिम रेलवे बांद्रा टर्मिनस – दुर्गापुरा स्टेशनों के बीच विशेष किराए पर एक सुपरफास्ट स्पेशल ट्रेन चलाएगी।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, इस ट्रेन का विवरण इस प्रकार हैः

ट्रेन संख्या 09604 बांद्रा टर्मिनस – दुर्गापुरा सुपरफास्ट स्पेशल (01 फेरे)

ट्रेन संख्या 09604 बांद्रा टर्मिनस – दुर्गापुरा स्पेशल शुक्रवार, 12 दिसम्बर 2025 को बांद्रा टर्मिनस से 18:20 बजे प्रस्थान करेगी और अगले दिन 14:40 बजे दुर्गापुरा पहुंचेगी।

यह ट्रेन बोरीवली, वापी, सूरत, भरूच, वडोदरा, रतलाम, भवानी मंडी, रामगंज मंडी, कोटा और सवाई माधोपुर स्टेशनों पर ठहरेंगी।

इस ट्रेन में AC-2 टियर, AC-3 टियर, AC-3 टियर (इकोनॉमी), स्लीपर क्लास तथा जनरल सेकंड क्लास कोच होंगे।

ट्रेन संख्या 09604 की बुकिंग सभी पीआरएस काउंटरों और आईआरसीटीसी वेबसाइट पर शुरू है। ट्रेनों के ठहराव, समय एवं संरचना से संबंधित विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

आणंद जिले के धुवारण में कार्यरत होगा केबल लैंडिग स्टेशन प्रोजेक्ट

गांधीनगर में आयोजित रीजनल एआई इम्पैक्ट कॉन्फ्रेंस में मुख्यमंत्री तथा उप मुख्यमंत्री की उपस्थिति में एमओयू हुआ

-: महात्मा मंदिर में वन टू वन बैठक आयोजित :-

- प्रोजेक्ट में 1317 करोड़ रुपए का संभावित निवेश होगा तथा 1300 से अधिक प्रत्यक्ष-परोक्ष रोजगार अवसर उपलब्ध होंगे
- सीएलएस की स्थापना से डेटा सेंटर और आईटी इन्फ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट में वृद्धि होगी
- गुजरात हाइपर स्केल और एंटरप्राइज डेटा सेंटर के लिए पसंदीदा स्थान बनेगा
- राज्य सरकार – गिफ्ट सिटी और हेनोक्स आईटी एंड डेटा सेंटर्स के बीच एमओयू

गांधीनगर : गुजरात में डेटा सेंटर और आईटी इन्फ्रास्ट्रक्चर विकास में वृद्धि कर हाइपर स्केल और एंटरप्राइज डेटा सेंटर के लिए गुजरात को डेस्टिनेशन ऑफ चॉइस बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया गया है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल तथा उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी की उपस्थिति में इस उद्देश्य से गांधीनगर के महात्मा मंदिर में राज्य सरकार, गिफ्ट सिटी और शारजाह की हेनोक्स आईटी एंड डेटा सेंटर्स प्राइवेट लिमिटेड के बीच एमओयू किया गया।

यह डेटा केबल लैंडिंग स्टेशन प्रोजेक्ट लगभग 1317 करोड़ रुपए के संभावित निवेश के साथ आणंद जिले के धुवारण में आकार लेगा और प्रत्यक्ष-परोक्ष मिलाकर 1300 से अधिक रोजगार अवसरों का सृजन होगा।

गांधीनगर में आयोजित हो रही रीजनल एआई इम्पैक्ट कॉन्फ्रेंस में शामिल होने आए हेनोक्स आईटी के सीईओ मसूद एम. शरीफ महमूद तथा राशिद अल- अली एवं यूएई के भारत स्थित राजदूत डॉ. अब्दुल नासिर जमाल अलशाली ने यह एमओयू करने के बाद मुख्यमंत्री, उपमुख्यमंत्री तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री से मुलाकात बैठक आयोजित की।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने विश्वास व्यक्त किया कि इस सीएलएस प्रोजेक्ट के परिणामस्वरूप आने वाले दिनों में गुजरात में तेज और मजबूत अंतरराष्ट्रीय कनेक्टिविटी से एआई, मशीन लर्निंग, स्टार्टअप प्लेटफॉर्म और जीसीसी के विकास को गति मिलेगी।

उन्होंने इस मुलाकात बैठक के दौरान कहा कि इतना ही नहीं, वैश्विक डेटा ट्रैफिक के लिए गुजरात महत्वपूर्ण प्रवेश द्वार – गेट-वे बनेगा और देश की डिजिटल इंडिपेंडेंसी क्षमता मजबूत होगी।

हेनोक्स आईटी एंड डेटा सेंटर्स के सीईओ ने इस केबल लैंडिंग स्टेशन के महत्व के बारे में कहा कि यह सेंटर भारत और वैश्विक इंटरनेट इन्फ्रास्ट्रक्चर को जोड़ने वाले महत्वपूर्ण मॉडल के रूप में काम करेगा। यह सेंटर स्मार्ट सिटीज के लिए उच्च बैंडविड्थ आवश्यकता वाली एप्लिकेशन्स के लिए बैकबोन के रूप में भी सेवाएं प्रदान करेगा।

इस बैठक में राजस्व विभाग की अपर मुख्य सचिव डॉ. जयंती रवि, उद्योग विभाग की प्रधान सचिव श्रीमती ममता वर्मा, मुख्यमंत्री की अपर प्रधान सचिव श्रीमती अवंतिका सिंह, मुख्यमंत्री के सचिव डॉ. विक्रांत पांडे, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग की सचिव श्रीमती पी. भारती आदि उपस्थित रहे।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने महात्मा मंदिर में रीजनल एआई इम्पैक्ट कॉन्फ्रेंस का प्रारंभ कराया

- उप मुख्यमंत्री तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री की उपस्थिति
- प्रधानमंत्री की विजनरी लीडरशिप में एआई राष्ट्रीय प्रगति का मिशन बना है : मुख्यमंत्री
- जन सुख-समृद्धि में वृद्धि, पारदर्शिता तथा फ्यूचर रेडी गुजरात के लिए एआई सक्षम संसाधन है : मुख्यमंत्री
- मुख्यमंत्री ने गुजरात यूनिफाइड डिजिटल स्टैक को ऑपरेशनलाइज्ड कर डिजिटल गवर्नेंस को अधिक स्मार्ट, तेज तथा सिटीजन सेंट्रिक बनाने की मंशा व्यक्त की

-: मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल :-

- गुजरात ने टेक्नोलॉजी प्रेरित विकास में सदैव अग्रसरता बनाए रखी है
- एग्रीकल्चर, हेल्थ, गवर्नेंस, अर्बन-रूरल ट्रांसफॉर्मेशन पर चिंतन-मंथन विकसित गुजरात@2047 के विजन में नया बल देगा

-: उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी :-

- एआई केवल एक क्षेत्र नहीं; बल्कि नई ऊर्जा है, जो प्रत्येक क्षेत्र को गति के साथ शक्ति दे रही है, गुजरात एआई क्रांति का केन्द्र बनेगा
- निवेशकों तथा एआई स्टार्टअप्स के लिए गुजरात प्लेटफॉर्म बनेगा, उज्ज्वल भविष्य के लिए लॉन्च पैड बनेगा

- 'सुशासन' के लिए वर्तमान समय में एआई सबसे शक्तिशाली टूल्स के रूप में स्थापित : विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अर्जुन मोढवाडिया
- मुख्यमंत्री के करकमलों से 'गुजरात एआई स्टैक' की लॉन्चिंग तथा 'गुजरात क्लाउड एडॉप्शन गाइडलाइन्स 2025' का अनावरण किया गया
- गुजरात सरकार ने गूगल, भाषिणी, गिफ्ट सिटी तथा हेनोक्स के साथ एमओयू पर हस्ताक्षर किए

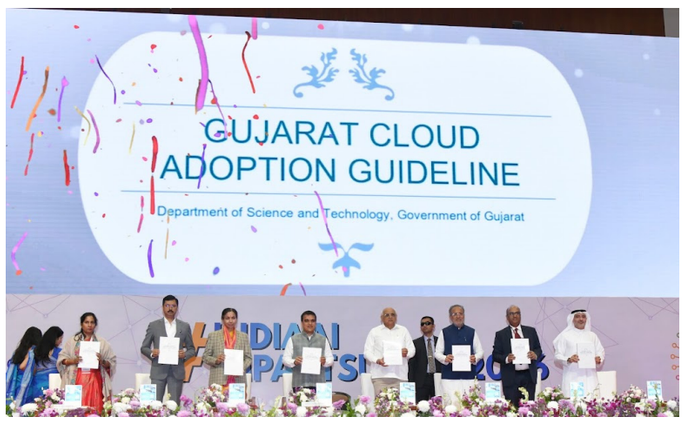

गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने राज्यव्यापी गुजरात यूनिफाइड डिजिटल स्टैक को ऑपरेशनलाइज कर डिजिटल गवर्नेंस को अधिक स्मार्ट, तेज तथा सिटीजन सेंट्रिक बनाने की मंशा व्यक्त की है।

उन्होंने जोड़ा कि इसके परिणामस्वरूप नागरिकों को सभी सेवाएँ एक ही प्लेटफॉर्म से आसानी से मिलने के साथ विभागों के बीच डेटा शेयरिंग तेज बनने से योजनाओं के आउटकम का रीयल टाइम एनालिसिस भी हो सकेगा।

श्री पटेल गुरुवार को गांधीनगर स्थित महात्मा मंदिर में आयोजित हो रही रीजनल एआई इम्पैक्ट कॉन्फ्रेंस का प्रारंभ कराते हुए संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कॉन्फ्रेंस अंतर्गत आयोजित एआई एक्सपीरियेंस जोन का उद्घाटन कर विभिन्न स्टार्टअप स्टॉल्स का निरीक्षण किया। इस समारोह में उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अर्जुन मोढवाडिया उपस्थित रहे।

इस कॉन्फ्रेंस का आयोजन केन्द्र सरकार के सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय तथा राज्य सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के उपक्रम से प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत में फरवरी-2026 में आयोजित होने वाली एआई इम्पैक्ट समिट के पूर्वार्ध तथा प्री-इवेंट के रूप में किया गया है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने इस अवसर पर गुजरात एआई स्टैक लॉन्च किया। इस एआई स्टैक के लॉन्च होने से सरकारी विभागों में 'प्लग-एंड-प्ले' एआई अपनाने के लिए 6 प्रमुख एआई टूल्स – कृषि एआई, योजना की पात्रता जाँच, प्रोक्योरमेंट चैटबोट, ग्रीवेंस क्लासीफायर, डॉक्यूमेंट एक्स्ट्रैक्टर तथा चैट मैनेजमेंट टूल से गवर्नेंस अधिक तेज, सटीक तथा नागरिकोन्मुखी बनेगा।

गुजरात क्लाउड एडॉप्शन गाइडलाइन्स 2025 भी महानुभावों ने लॉन्च की। राज्य के डिजिटल गवर्नेंस को अधिक सुरक्षित, स्केलेबल तथा एआई रेडी बनाने के लिए ये गाइडलाइन्स 2025 में उपयोगी सिद्ध होंगी और Meity एम्पैनल्ड कम्प्यूट का उपयोग आसान बनेगा।

इस कॉन्फ्रेंस में दो महत्वपूर्ण एमओयू पर हस्ताक्षर किए गए। इनमें गुजरात सरकार - गूगल और भाषिणी के बीच हुए एमओयू के अनुसार बहुभाषीय एआई, गुजराती भाषा मॉडलों और डिजिटल पब्लिक सर्विसेज के लिए रणनीतिक भागीदारी की जाएगी।

इतना ही नहीं; गुजरात सरकार – गिफ्ट सिटी तथा हेनोक्स द्वारा राज्य में केबल लैंडिंग स्टेशन्स (सीएलएस) स्थापित करने के लिए एमओयू किया गया। इससे गुजरात वैश्विक डिजिटल कनेक्टिविटी का केन्द्र बनेगा तथा ग्रीन डेटा सेंटर्स को बल प्रदान करेगा।

मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर कहा कि प्रधानमंत्री की लीडरशिप में एआई केवल टेक्नोलॉजी का संसाधन नहीं, बल्कि राष्ट्रीय प्रगति का मिशन बन गया है। गुजरात ने सदैव टेक्नोलॉजी प्रेरित विकास में अग्रसरता बनाए रखी है। उन्होंने जोड़ा कि जन सुख-समृद्धि में वृद्धि, पारदर्शिता तथा फ्यूचर रेडी गुजरात के लिए एआई सक्षम संसाधन है।

श्री पटेल ने कहा कि प्रधानमंत्री की विजनरी लीडरशिप में देश में गत एक दशक में बहुत बड़े बदलाव आए हैं। छोटे से छोटे व्यक्ति तक टेक्नोलॉजी पहुँची है और इंडिया एआई मिशन शुरू हुआ है। गुजरात ने भी इसके अनुरूप रहकर टास्क फोर्स का गठन किया है।

उन्होंने अपेक्षा दर्शाई कि इस रीजनल एआई इम्पैक्ट कॉन्फ्रेंस में होने वाला सामूहिक मंथन एआई के उपयोग द्वारा टेक्नोलॉजी की मदद से आज के कार्यों से आने वाले कल की क्षमता के दृष्टिकोण को बदलने में उपयोगी बनेगा।

उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी

उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी ने गुजरात को एआई क्रांति का निर्माण करने वाला राज्य बताया और निवेशकों तथा एआई स्टार्टअप्स का गुजरात में स्वागत किया।

श्री संघवी ने कहा कि गुजरात सदैव 'अतिथि' तथा 'इनोवेशन' – इन दो शक्तिशाली परिबलों का स्वागत करता आया है। हमारा लक्ष्य ह्यूमन वर्सेज मशीन नहीं, बल्कि ह्यूमन विद मशीन है, जहाँ मानव कल्पना ने एक ऐसे पार्टनर का निर्माण किया है, जो कल्पना भी कर सकता है। एआई अब केवल एक क्षेत्र नहीं, बल्कि नई ऊर्जा है, जो प्रत्येक क्षेत्र को गति के साथ शक्ति दे रही है। उन्होंने गुजरात में विभिन्न क्षेत्रों में हो रहे एआई आधारित उपयोगों पर प्रकाश डालते हुए जोड़ा कि गिफ्ट सिटी में माइक्रोसॉफ्ट के सहयोग से स्थापित एआई सेंटर ऑफ एक्सीलेंस (सीओई) भारत के आगामी टेक इकोसिस्टम को आकार दे रहा है। यह हेल्थकेयर, मैन्युफैक्चरिंग तथा शिक्षा जैसे क्षेत्रों में गति दे रहा है। गुजरात में कृषि क्षेत्र में फसल एआई प्लेटफॉर्म द्वारा किसानों को पानी की बचत करने तथा कीटाणुनाशकों का उपयोग कम करने में मदद मिल रही है। कृषि प्रगति प्लेटफॉर्म पर एक लाख से अधिक किसानों को फसल के स्वास्थ्य, भूमि की स्थिति तथा जल की उपलब्धता के बारे में एआई आधारित सलाह मिल रही है, जो उनकी आय बढ़ाने में सहायक है। इसके अतिरिक्त; सिम्बा-एसआईएमबीए प्रोजेक्ट द्वारा वन्यजीवों की रक्षा की जा रही है। सार्वजनिक परिवहन सेवा जीएसआरटीसी में भी कार्यक्षमता सुधारने के लिए एआई का उपयोग किया जा रहा है।

श्री संघवी ने गुजरात पुलिस द्वारा नागरिक सुरक्षा के लिए एआई टेक्नोलॉजी के किए गए उपयोग के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि अहमदाबाद में आयोजित होने वाली भगवान जगन्नाथजी की रथयात्रा में पुलिस ने एआई सर्वेलांस के जरिए 5,481 गुमशुदा बच्चों को खोजकर उनका परिवार से पुनर्मिलन कराया। इतना ही नहीं, सुदूरवर्ती तथा ट्राइबल क्षेत्र माने जाने वाले दाहोद जिले में पुलिस ने अवैध गांजे की खेती के विरुद्ध राज्य का पहला एआई आधारित ऑपरेशन चलाया। मशीन-लर्निंग मॉडलों ने गांजे के पौधों को पहचाना और ड्रोन सर्वेलांस से 1.19 करोड़ रुपए से अधिक मूल्य का गांजा पकड़ा। इसके अलावा, अंबाजी मेले में एआई सर्वेलांस ने संदिग्ध गतिविधियों को ट्रैक कर गुमशुदा व्यक्तियों को खोजा तथा भीड़ प्रबंधन को मजबूत बनाया।

श्री हर्ष संघवी ने सभी निवेशकों और एआई स्टार्टअप्स को गुजरात में निवेश करने, निर्माण करने तथा अपने सपने साकार करने के लिए आमंत्रण दिया। उन्होंने कहा, "गुजरात आपका प्लेटफॉर्म बनेगा। गुजरात आपके भविष्य का लॉन्च पैड बनेगा।"

एमसीएक्स पर नए शिखर पर पहुँचा चांदी वायदाः सोना वायदा में 879 रुपये का ऊछालः क्रूड ऑयल वायदा 15 रुपये नरम

कमोडिटी वायदाओं में 35104.6 करोड़ रुपये और कमोडिटी ऑप्शंस में 128369.58 करोड़ रुपये का दर्ज हुआ टर्नओवरः सोना-चांदी के वायदाओं में 29636.47 करोड़ रुपये का हुआ कारोबारः बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स फ्यूचर्स 31940 पॉइंट के स्तर पर

मुंबईः देश के अग्रणी कमोडिटी डेरिवेटिव्स एक्सचेंज एमसीएक्स पर कमोडिटी वायदा, ऑप्शंस और इंडेक्स फ्यूचर्स में 163482.6 करोड़ रुपये का टर्नओवर दर्ज हुआ। कमोडिटी वायदाओं में 35104.6 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ, जबकि कमोडिटी ऑप्शंस में 128369.58 करोड़ रुपये का नॉशनल टर्नओवर हुआ। बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स का दिसंबर वायदा 31940 पॉइंट के स्तर पर ट्रेड हो रहा था। कमोडिटी ऑप्शंस में कुल प्रीमियम टर्नओवर 2191.27 करोड़ रुपये का हुआ।

कीमती धातुओं में सोना-चांदी के वायदाओं में 29636.47 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। एमसीएक्स सोना फरवरी वायदा सत्र के आरंभ में 130250 रुपये के भाव पर खूलकर, 131030 रुपये के दिन के उच्च और 130119 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 129796 रुपये के पिछले बंद के सामने 879 रुपये या 0.68 फीसदी की मजबूती के साथ 130675 रुपये प्रति 10 ग्राम बोला गया। गोल्ड-गिनी दिसंबर वायदा 379 रुपये या 0.36 फीसदी बढ़कर 104550 रुपये प्रति 8 ग्राम के भाव पर ट्रेड हो रहा था। गोल्ड-पेटल दिसंबर वायदा 55 रुपये या 0.42 फीसदी बढ़कर 13100 रुपये प्रति 1 ग्राम के भाव पर ट्रेड हो रहा था। सोना-मिनी जनवरी वायदा 128999 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 129650 रुपये और नीचे में 128795 रुपये पर पहुंचकर, 855 रुपये या 0.67 फीसदी बढ़कर 129355 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर ट्रेड हो रहा था। गोल्ड-टेन दिसंबर वायदा प्रति 10 ग्राम 129291 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 129900 रुपये और नीचे में 128701 रुपये पर पहुंचकर, 128795 रुपये के पिछले बंद के सामने 861 रुपये या 0.67 फीसदी बढ़कर 129656 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर ट्रेड हो रहा था।

चांदी के वायदाओं में चांदी मार्च वायदा सत्र के आरंभ में 189908 रुपये के भाव पर खूलकर, 194130 रुपये के ऑल टाइम हाई और 189908 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 188735 रुपये के पिछले बंद के सामने 4811 रुपये या 2.55 फीसदी के ऊछाल के साथ 193546 रुपये प्रति किलो के भाव पर कारोबार कर रहा था। इनके अलावा चांदी-मिनी फरवरी वायदा 4494 रुपये या 2.37 फीसदी की मजबूती के साथ 193920 रुपये प्रति किलो बोला गया। जबकि चांदी-माइक्रो फरवरी वायदा 4431 रुपये या 2.34 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 193900 रुपये प्रति किलो पर आ गया।

मेटल वर्ग में 2468.02 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। तांबा दिसंबर वायदा 11.7 रुपये या 1.08 फीसदी बढ़कर 1097.3 रुपये प्रति किलो के भाव पर ट्रेड हो रहा था। जबकि जस्ता दिसंबर वायदा 3.3 रुपये या 1.06 फीसदी बढ़कर 313.55 रुपये प्रति किलो के भाव पर ट्रेड हो रहा था। इसके सामने एल्यूमीनियम दिसंबर वायदा 1.95 रुपये या 0.7 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 278.75 रुपये प्रति किलो पर आ गया। जबकि सीसा दिसंबर वायदा 65 पैसे या 0.36 फीसदी बढ़कर 182 रुपये प्रति किलो के भाव पर ट्रेड हो रहा था।

इन जिंसों के अलावा कारोबारियों ने एनर्जी सेगमेंट में 2994.48 करोड़ रुपये के सौदे किए। एमसीएक्स क्रूड ऑयल दिसंबर वायदा 5274 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 5283 रुपये और नीचे में 5207 रुपये पर पहुंचकर, 15 रुपये या 0.29 फीसदी घटकर 5227 रुपये प्रति बैरल के भाव पर ट्रेड हो रहा था। जबकि क्रूड ऑयल-मिनी दिसंबर वायदा 14 रुपये या 0.27 फीसदी गिरकर 5230 रुपये प्रति बैरल के भाव पर पहुंचा। इनके अलावा नैचुरल गैस दिसंबर वायदा सत्र के आरंभ में 415.9 रुपये के भाव पर खूलकर, 417.3 रुपये के दिन के उच्च और 405 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 420.6 रुपये के पिछले बंद के सामने 15.3 रुपये या 3.64 फीसदी की गिरावट के साथ 405.3 रुपये प्रति एमएमबीटीयू के भाव पर कारोबार कर रहा था। जबकि नैचुरल गैस-मिनी दिसंबर वायदा 15.3 रुपये या 3.64 फीसदी घटकर 405.5 रुपये प्रति एमएमबीटीयू के भाव पर ट्रेड हो रहा था।

कृषि जिंसों में मेंथा ऑयल दिसंबर वायदा 904 रुपये पर खूलकर, 1.5 रुपये या 0.16 फीसदी गिरकर 909.5 रुपये प्रति किलो के भाव पर पहुंचा।

कारोबार की दृष्टि से एमसीएक्स पर सोना के विभिन्न अनुबंधों में 12412.85 करोड़ रुपये और चांदी के विभिन्न अनुबंधों में 17223.62 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। इसके अलावा तांबा के वायदाओं में 2004.38 करोड़ रुपये, एल्यूमीनियम और एल्यूमीनियम-मिनी के वायदाओं में 124.03 करोड़ रुपये, सीसा और सीसा-मिनी के वायदाओं में 55.07 करोड़ रुपये, जस्ता और जस्ता-मिनी के वायदाओं में 284.53 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ।

इन जिंसों के अलावा क्रूड ऑयल और क्रूड ऑयल-मिनी के वायदाओं में 741.44 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। जबकि नैचुरल गैस और नैचुरल गैस-मिनी के वायदाओं में 2239.55 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ।

ओपन इंटरेस्ट सोना के वायदाओं में 15078 लोट, सोना-मिनी के वायदाओं में 69744 लोट, गोल्ड-गिनी के वायदाओं में 19460 लोट, गोल्ड-पेटल के वायदाओं में 313320 लोट और गोल्ड-टेन के वायदाओं में 33794 लोट के स्तर पर था। जबकि चांदी के वायदाओं में 18636 लोट, चांदी-मिनी के वायदाओं में 41743 लोट और चांदी-माइक्रो वायदाओं में 118677 लोट के स्तर पर था। क्रूड ऑयल के वायदाओं में 19007 लोट और नैचुरल गैस के वायदाओं में 33773 लोट के स्तर पर था। इंडेक्स फ्यूचर्स में बुलडेक्स दिसंबर वायदा 31710 पॉइंट पर खूलकर, 31940 के उच्च और 31600 के नीचले स्तर को छूकर, 421 पॉइंट बढ़कर 31940 पॉइंट के स्तर पर ट्रेड हो रहा था।

कमोडिटी ऑप्शंस ऑन फ्यूचर्स में क्रूड ऑयल दिसंबर 5300 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति बैरल 10.6 रुपये की गिरावट के साथ 44 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस दिसंबर 420 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू 6.2 रुपये की गिरावट के साथ 13.8 रुपये हुआ।

सोना दिसंबर 130000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 321.5 रुपये की बढ़त के साथ 2417.5 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी दिसंबर 198000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 1371.5 रुपये की बढ़त के साथ 4234 रुपये हुआ। तांबा दिसंबर 1100 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 3.95 रुपये की बढ़त के साथ 17 रुपये हुआ। जस्ता दिसंबर 315 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 69 पैसे के सुधार के साथ 3.35 रुपये हुआ।

पुट ऑप्शंस में क्रूड ऑयल दिसंबर 5200 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति बैरल 1.3 रुपये की बढ़त के साथ 63.2 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस दिसंबर 410 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू 7.7 रुपये की बढ़त के साथ 21.9 रुपये हुआ।

सोना दिसंबर 130000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 560 रुपये की गिरावट के साथ 1757 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी दिसंबर 190000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 2231.5 रुपये की गिरावट के साथ 4535 रुपये हुआ। तांबा दिसंबर 1050 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 1.69 रुपये की गिरावट के साथ 3.39 रुपये हुआ। जस्ता दिसंबर 305 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 1 पैसे के सुधार के साथ 1.2 रुपये हुआ।